हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार, 11 जनवरी 2026

10 सड़क उखाड़ कर बनाना भूला विभाग दुकानदार परेशान

11 सिलेंडर से गूंगा हलवाई की दुकान में लगी आग

SANSKARAM GROUP OF SCHOOLS

THE TIMES OF INDIA
Awarded with Times School Survey award 2025-26

जीतें 6 लाख तक की स्कॉलरशिप

Announcing
SANSKARAM SCHOLARSHIP UNIVERSE 3.0

एक स्कॉलरशिप, जो सपनों को दे उड़ान और परिवारों का बने सहारा।

Exam Date 18th January 2026

CLASSES Nursery to 12th

No FEE /-
Free Transport

EXAM TIMING 10 AM to 12 PM

VENUE Jhajjar Campus Patauda Campus

For Registration
You May Visit at Any of School Receptions

Nursery to 2nd Grade: Letter Coloring, Freehand Painting and Basic Algebra

Exam Pattern - Objective Type

NCERT Syllabus of the same class will be there in exam

Class	Subjects (20 Questions Each)	Marks	Duration
3rd to 10th	Science, S.S, Maths, Reasoning	80	60 Min.
11th & 12th (Sci.)	Physics, Chemistry, Maths, Biology	80	60 Min.
11th & 12th (Com.)	Economics, Accounts, B.St, Maths	80	60 Min.
11th & 12th (Arts)	English, Pol.Sci., Geography, Reasoning	80	60 Min.

स्कॉलरशिप टेस्ट अब आपके शहर में
चरखी दादरी | साल्हावास | रोहतक

Exam Date : 11th January 2026

चरखी दादरी : जनता कॉलेज, चरखी दादरी
साल्हावास : धर्मशाला, सरकारी स्कूल के पास
रोहतक : जाट भवन, सेक्टर–1, रोहतक

समय: सुबह 10 से 12 बजे तक

ON-SPOT SCHOLARSHIP CASH PRIZES

Scholarship Distribution

Rank	Scholarship Benefit
1st - 10th	100% Scholarship (Cash)
11th - 20th	50% Scholarship
21st - 40th	25% Scholarship

Prizes	Nur. to 2nd Class	3rd to 5th Class	6th to 8th Class	9th to 10th Class
1st Prize	1100/- Cash	2100/- Cash	3100/- Cash	5100/- Cash
2nd Prize	500/- Cash	1100/- Cash	2100/- Cash	3100/- Cash
3rd Prize	500/- Cash	500/- Cash	1100/- Cash	2100/- Cash

माता दमयंती बालिका छात्रवृति योजना
Applicable for class 9th to Ph.D
लाभार्थी
सभी छात्राएँ जो अपने अभिभावकों की इकलौती संतान हैं

Scholarship available for talented students who secure positions in Art & Craft, Singing & Dance, or Sports at State, National or International levels.

Jhajjar Campus : NH.334B, Main Dadri Road, Khatiwas, Jhajjar | Pataudа Campus : NH.352, Pataudа, Near Kulana, Jhajjar

JHAJJAR CAMPUS : 8222889860,62 | PATAUDA CAMPUS : 9053007801,02

खबर संक्षेप

बहादुरगढ़। नितिन नबीन से मुलाकात करते विक्रम सिंह। फोटो : हरिभूमि

विकास कार्यों की जानकारी दी

बहादुरगढ़। ग्रीवेंस कमेटी सदस्य विक्रम सिंह ने भाजपा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नबीन से मुलाकात की। विक्रम ने उनको जिला झज्जर में चल रहे विकास कार्यों, संगठनात्मक गतिविधियों की जानकारी दी। विक्रम ने बताया कि नितिन नबीन ने संगठन को जमीनी स्तर पर अधिक सशक्त बनाने का आह्वान किया।

जांगिड़ ब्राह्मण महासभा का सम्मान समारोह आज

झज्जर। भगवान विश्वकर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट व अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा की जिला इकाई द्वारा रविवार को मेन बाजार स्थित जांगिड़ धर्मशाला में प्रतिभा व वरिष्ठ जन सम्मान समारोह का आयोजन किया जाएगा। महासभा के नवनियुक्त प्रदेशाध्यक्ष हनुमान प्रसाद जांगिड़ की अध्यक्षता में होने वाले इस कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा मुख्यातिथि के रूप में शिरकत करेंगे। जांगिड़ महासभा के जिलाध्यक्ष प्रवीण जांगड़ा ने बताया कि समारोह में जोगिंद्र जांगड़ा, अमृतलाल जांगिड़, डॉक्टर विनोद जांगड़ा, भारती शर्मा, जितेंद्र जांगड़ा, आरके केसवानिया, खुशीराम जांगिड़ सहित अन्य भी उपस्थित रहेंगे।

लाइनपार में नशे के विरुद्ध किया जागरूक

बहादुरगढ़। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा शनिवार को लाइनपार स्थित रेनबो स्कूल में नशा मुक्ति जागरूकता और रोकथाम अभियान कैंप का आयोजन किया गया। कैंप में प्राधिकरण की तरफ से नीता देवी व नशा मुक्ति केंद्र संचालक छोटूराम और हवलदार वीरेंद्र ने बच्चों को नशे के प्रति जागरूक करते हुए इस जहर से दूर रहने के लिए प्रेरित किया।

यादव धर्मशाला से लेकर छिक्कारा चौक तक सड़क की परत उखाड़ी

सड़क उखाड़ कर बनाना भूला विभाग दुकानदार और कॉलोनीवासी परेशान

दुकानदार बोले, सड़क टूटने के कारण ग्राहकों का आवागमन रुक गया है जिस कारण उनकी दुकानदारी प्रभावित हो रही

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

शहर के पुराना बर्फखाना रोड की सड़क उखाड़ने के बाद पीडब्ल्यूडी द्वारा उसकी सुध नहीं ली गई है। जिस कारण दुकानदारों व कॉलोनी निवासियों को परेशानी आ रही है। दुकानदारों का कहना है कि सड़क टूटने के कारण ग्राहकों का आवागमन रुक गया है, जिस कारण उनकी दुकानदारी प्रभावित हो रही है। व्यापार मंडल के ब्लॉक उपाध्यक्ष रजनीश हुड्डा ने बताया कि पिछले दिनों विभाग द्वारा यादव धर्मशाला से लेकर छिक्कारा चौक तक सड़क की परत उखाड़ी गई थी।

इसके बाद कई दिनों तक मलबा नहीं उठाया गया तो इस रोड के दुकानदार अपनी समस्या को लेकर पीडब्ल्यूडी के एक्सईएन कार्यालय भी पहुंचे थे। वहां उपस्थित जूनियर इंजीनियर अरुण कुमार ने व्यापारियों को आगामी दो-तीन दिनों में मलबा उठवाने व शीघ्र सड़क निर्माण कार्य शुरू कराने का आश्वासन दिया था।

दुकानदार विकास जिंदल, सुमित कुमार, नरेश आदि ने बताया कि आश्वासन दिए जाने के अगले दो-तीन दिनों में मलबा तो उठा लिया गया लेकिन सड़क निर्माण कार्य अभी तक शुरू नहीं किया गया।

झज्जर। पुराना बर्फखाना रोड पर हुआ जलभराव। फोटो : हरिभूमि

सीवरेज व पेयजल कनेक्शन टूटे

जेसीबी द्वारा सड़क से परत उखाड़ने के दौरान सीवरेज व पेयजल कनेक्शन भी टूट गए जिस कारण अब यहां जलभराव की स्थिति बनी है। कालोनीवासी कृष्ण गुलिया ने बताया कि सड़क उखाड़े जाने व मलबा उठाए जाने के बाद कई बार रात के समय ओवरलोड़ गाड़ियां भी इस सड़क पर आगे तक आ जाती हैं। आगे हुए जलभराव के बाद उन्हें वापिस लौटता पड़ता है जिस कारण परेशानी आती है। जिला प्रशासन को चाहिए कि वह कोई साइन बोर्ड लगाकर वाहन चालकों को सड़क की स्थिति से अवगत कराएं। इस संबंध में नगरपरिषद के चेयरमैन जिले सिंह सैनी का कहना है कि जनस्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए गए है कि जल्द ही सीवरेज व्यवस्था को दुरूस्त कराया जाए। जल्द ही सीवरेज व्यवस्था दुरूस्त होने के बाद सड़क निर्माण कार्य शुरू करवा दिया जाएगा।

बहादुरगढ़। सीएम नायब सैनी का स्वागत करते संजीव सैनी व अन्य। फोटो : हरिभूमि

बाइपास पर सीएम ने की कार्यकर्ताओं से मुलाकात

बहादुरगढ़। दिल्ली से हिसार जाते समय मुख्यमंत्री नायब सैनी का काफिला बहादुरगढ़ के बाइपास पर रुक गया। यहां भाजपा लाभार्थी प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक संजीव सैनी ने उनका जोरदार स्वागत किया। सीएम ने सभी कार्यकर्ताओं के साथ आत्मीयता से मुलाकात की। उन्होंने भविष्य में निरंतर सेवा भाव से आगे बढ़ने के लिए आशीर्वाद देते हुए प्रेरित भी किया। इस मौके पर जापान कुलासी, विकास बराही, रोहित कादियान व रविंद्र छिकारा आदि मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। सीएम नायब सैनी को तस्वीर भेंट करते जसबीर सैनी। फोटो : हरिभूमि

जसबीर सैनी ने लिया सीएम का आशीर्वाद

बहादुरगढ़। हरियाणा सैनी समाज का प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद भाजपा नेता जसबीर सैनी ने दिल्ली हरियाणा भवन में सीएम नायब सैनी से मिलकर आशीर्वाद लिया। मुख्यमंत्री को महाराजा शुरसैनी की तस्वीर भेंट की। सीएम ने भी उन्हें शुभकामनाएं देते हुए सभी को साथ लेकर चलने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर धर्मबीर सैनी, रोहित, शिव वर्मा, रविंद्र कुमार, गगन सिंह, राजन शर्मा, उमेद, अशोक कुमार, सतीश कुमार, रामानंद रंगा, कृष्ण कुमार, हरीश, नितेश, ललित, राजेश कुमार, महावीर, नीरज, अजित कुमार, मोहन सिंह, सुभाष व प्रदीप आदि मौजूद रहे।

झज्जर। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप का प्रतीकात्मक पुतला फूंकते हुए एसयूसीआई कार्यकर्ता व समर्थक।

एसयूसीआई कार्यकर्ताओं ने फूंका ट्रंप का पुतला

झज्जर। एसयूसीआई पार्टी के कार्यकर्ताओं व समर्थकों ने शनिवार को अमेरिकी सेना द्वारा वेनेजुएला पर हमला कर राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी सिलिया एंडेला को किडनैप करके देर रात में जबरन अमेरिका ले जाने के विरोध में अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप का पुतला दहन किया गया। रेवाड़ी बाईपास पर प्रदर्शन करते हुए कार्यकर्ताओं ने अमेरिकी साम्राज्यवाद मुर्दाबाद के नारे लगाते हुए वेनेजुएला के राष्ट्रपति को रिहा करने की मांग की। जिला कमेटी सदस्य ओमबीर सिंह ने कहा कि अमेरिका द्वारा झूठे बहाने बना कर देशों की संप्रभुता पर पहले भी हमले किए गए हैं। ट्रंप सभी नियम, परंपराओं को तोड़कर अंतरराष्ट्रीय नियमों की धज्जियां उड़ा रहा है। लोकल कमेटी सदस्य संसार सुरहेती ने बताया कि अमेरिका वेनेजुएला के पेट्रोलियम भंडारों पर अपना नियंत्रण चाहता है। इसलिए उसने वहां के राष्ट्रपति पर ड्रग्स संबंधी आरोप लगाते हुए इस घटना का अंजाम दिया। प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रपति ट्रंप का पुतला जलाते हुए उनके द्वारा किए गए कार्य की निंदा की। इस मौके पर लोकल कमेटी सदस्य किशन छबीली, हरीश कुमार, आनंद, बलजीत सिंह, सलमान, दीपक सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

निलोठी में विधायक के सामने रखी जल निकासी की मांग

कटरा एक्सप्रेसवे पर चढ़ने-उतरने की सुविधा के लिए कर रहे प्रयास : जून

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

विधायक राजेश जून ने शनिवार को जनसंपर्क अभियान के तहत गांव निलोठी का दौरा कर ग्रामवासियों से सीधा संवाद किया। इस दौरान उन्होंने बीते एक वर्ष में गांव निलौठी व विधानसभा क्षेत्र में कराए गए विकास कार्यों की जानकारी दी और ग्रामीणों की मौजूदा समस्याओं को मौके पर ही सुना।

शनिवार को विधायक राजेश जून निलोठी गांव की रोड वाली चौपाल में पहुंचे। यहां उन्होंने लोगों से सड़क, बिजली, पेयजल, स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़े कार्यों सहित विधानसभा में शुरू व प्रगति पर चल रही विकास योजनाओं की जानकारी साझा की। विधायक ने ग्रामवासियों को बताया कि निलोठी से गुजर रहे कटरा एक्सप्रेसवे पर चढ़ने-उतरने की सुविधा की प्रमुख मांग को लेकर वे मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी से दो बार चर्चा कर चुके हैं और केंद्रीय स्तर पर भी प्रयास जारी हैं, जिससे यह मांग शीघ्र पूरी होने की उम्मीद है। जनसंपर्क अभियान के दौरान ग्रामीणों ने खेतों के रास्ते पक्के कराने, बिजली मीटर की समस्या, गंदे पानी की निकासी सहित कई समस्याएं रखीं। विधायक ने कहा कि इनका जल्द समाधान किया जाएगा। मौके पर सरपंच प्रतिनिधि ओमप्रकाश लाल, युवराज छिल्लर, नरेश छिकारा, कुक्कू, बिल्लू, मास्टर टेकराम, राकेश छिकारा, सुरेश, सुनील, जस्सी जून, अजय शेखावत, अजीत व लोकेश आदि मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। निलोठी में ग्रामीणों को संबोधित करते विधायक राजेश जून। फोटो : हरिभूमि

झज्जर। विद्यालय स्टाफ सदस्यों के साथ होनहार कैडेट्स। फोटो : हरिभूमि

एनसीसी कैंप में वॉलीबॉल में जीता गोल्ड

झज्जर। इंडो अमेरिकन स्कूल के विद्यार्थियों ने दस दिवसीय एनसीसी कैंप में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए स्कूल का नाम रोशन किया है। स्कूल निदेशक बिजेंद्र कादियान ने बताया कि उनके संस्थान के छात्र प्रतीक, देव व प्रिंस ने वॉलीबॉल प्रतियोगिता में जहां गोल्ड मेडल हासिल किया वहीं रिले रेस में आदित्य ने ब्रांज मेडल लिया। उन्होंने इस सफलता पर विजेता विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि एनसीसी जैसे कैंप विद्यार्थियों में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, टीम वर्क और राष्ट्रभक्ति की भावना का विकास करते हैं।

आरईडी स्कूल में शिक्षकों को दी योगाभ्यास से होने वाले लाभों की

झज्जर। आरईडी स्कूल में स्वास्थ्य, अनुशासन एवं सकारात्मक जीवनशैली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शनिवार को योग जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पतंजलि योग समिति से जुड़े योग प्रशिक्षक डॉक्टर समर्थ, ब्रह्मचारी इंद्रजीत, रामनिवास व गौरव ने शिक्षकों को योगाभ्यास कराते हुए उनसे होने वाले शारीरिक, मानसिक व आत्मिक लाभों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि नियमित योग अभ्यास से शरीर निरोग रहता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इसके अलावा नियमित योग करने वाले व्यक्ति को मानसिक तनाव और थकान से भी मुक्ति मिलती है। कार्यक्रम के दौरान शिक्षकों को नियमित योग करने संबंधी शपथ भी दिलाई गई। प्राचार्या गीता ने शिक्षकों से कहा कि योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक वैज्ञानिक पद्धति है।

झज्जर। बैठक के दौरान आवश्यक दिशा निर्देश देते डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल।

डीसी ने गणतंत्र दिवस समारोह की तैयारियों को लेकर दिए जरूरी निर्देश

झज्जर। देश का 77वां गणतंत्र दिवस समारोह आगामी 26 जनवरी को जिले में धूमधाम से मनाया जाएगा। जिला एवं उपमंडल स्तर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों को लेकर प्रशासनिक तैयारियां प्रारंभ कर दी गई हैं। जिला स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह रोडवेज वर्कशॉप परिसर में आयोजित किया जाएगा और फाइनल रिहर्सल 24 जनवरी को आयोजित की जाएगी। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने शुक्रवार को लघु सचिवालय स्थित कॉन्फ्रेंस रूम में गणतंत्र दिवस समारोह की तैयारियों को लेकर संबंधित अधिकारियों की बैठक लेते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ समयबद्ध रूप से अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन सुनिश्चित करें।

बहादुरगढ़। स्लोगन व पोस्टर दिखाती प्रतिभागी छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

स्लोगन लेखन में पारुल व योगिता रही प्रथम

- विश्व हिंदी दिवस पर वैश्य आर्य शिक्षण महिला कॉलेज में हुई प्रतियोगिता

बहादुरगढ़। वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय में शनिवार को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर स्लोगन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पारुल एवं योगिता, द्वितीय स्थान नेहा एवं मेघा और तृतीय स्थान शिवानी एवं मेघा ने प्राप्त किया। जबकि प्रिया दलई, खुशबू कुमारी व नम्रता गौड़ को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रतिवर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। प्रिंसिपल डॉ. आशा शर्मा ने बताया कि इस वर्ष की थीम हिंदी: पारंपरिक ज्ञान से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक निर्धारित की गई है ताकि यह दर्शाया जाए कि हिंदी न केवल एक समृद्ध सांस्कृतिक और साहित्यिक भाषा है, बल्कि आधुनिक तकनीक और नवाचार के क्षेत्र में भी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है। स्लोगन लेखन प्रतियोगिता में अंजलि, प्रिया, मेघा, पारुल, योगिता, प्रिया दलई, नेहा, शिवानी, खुशबू कुमारी, मीरा कुमारी, नम्रता गौड़ आदि छात्राओं ने सहभागिता की। प्रतियोगिता के माध्यम से संदेश दिया गया कि हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीयों की सांस्कृतिक पहचान और एकता का सशक्त आधार है। सभी विजेताओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

योग सहायकों को दिया प्रशिक्षण

- आयुष विभाग हरियाणा, योग आयोग तथा जिला प्रशासन का संयुक्त अभियान

झज्जर। आयुष विभाग हरियाणा, योग आयोग तथा जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में सूर्य नमस्कार अभियान का आयोजन 12 जनवरी से 12 फरवरी तक किया जाएगा। आयोजन को लेकर आयुष विभाग द्वारा आवश्यक तैयारियां की जा रही हैं। शनिवार को बाबा प्रसाद गिरी मंदिर में सूर्य नमस्कार अभियान की तैयारियों को लेकर आयुष योग सहायकों की एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉक्टर संगीता ने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य ऋषि संस्कृति एवं कृषि संस्कृति के संदेश को जन-आंदोलन के रूप में घर-घर तक पहुंचाना है। वहीं जिला योग संयोजक डॉक्टर पवन कुमार ने बताया कि कार्यशाला में योग विशेषज्ञ बलदेव तथा आयुष योग सहायक विजेंद्र एवं गुरमीत द्वारा हरियाणा योग आयोग द्वारा जारी प्रोटोकॉल के अनुसार सूर्य नमस्कार का अभ्यास करवाया गया। अभियान के अंतर्गत रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया, सूर्य नमस्कार की एकरूप विधि तथा रिपोर्टिंग प्रणाली के संबंध में विस्तृत जानकारी एवं आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

झज्जर। कार्यशाला में सूर्य नमस्कार कार्यक्रम की जानकारी देते डॉक्टर पवन।

बहादुरगढ़। व्याख्यान के उपरांत मुख्य वक्ता के साथ विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

छारा महाविद्यालय में बताए सड़क सुरक्षा के नियम

बहादुरगढ़। छारा के चौधरी हरद्वारी लाल राजकीय महाविद्यालय में कार्यकारी प्राचार्य डॉ. अनीता दलाल के मार्गदर्शन में रोड सेफ्टी सेल की प्रभारी डॉ. रिदम द्वारा रोड सेफ्टी विषय पर एक विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में सतीश ने विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा के नियमों, यातायात संकेतों के महत्व, हेलमेट व सीट बेल्ट के अनिवार्य उपयोग तथा सड़क दुर्घटनाओं से बचाव के उपायों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जागरूकता और अनुशासन ही सड़क दुर्घटनाओं को कम करने का सबसे प्रभावी साधन है।

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित जेजेपी बीसी सेल प्रदेशाध्यक्ष राजेश सैनी एवं अन्य।

नंबरदार मनोज पांचाल को सौंपी जेजेपी बीसी सेल जिलाध्यक्ष की जिम्मेदारी

झज्जर। शनिवार को जननायक जनता पार्टी की बीसी सेल की जिला कार्यकारिणी का गठन किया गया। कार्यक्रम में बीसी सेल के प्रदेशाध्यक्ष राजेश सैनी ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की, जबकि अध्यक्षता बीसी सेल के जिलाध्यक्ष मनोज पांचाल ने की। प्रदेशाध्यक्ष ने चारों हलकों के बीसी सेल अध्यक्षों की घोषणा की। कार्यकारिणी में जिलाध्यक्ष नंबरदार मनोज पांचाल, झज्जर हलकाध्यक्ष जयभगवान मारौत, बादली हलकाध्यक्ष सतीश उर्फ धौला, बेरी हलकाध्यक्ष शमशेर जांगड़ा और बहादुरगढ़ हलके की कमान उमेद सैन को सौंपी गई। उन्होंने मुख्यमंत्री से मांग करते हुए कहा कि बीसी समाज को नौकरियों में 27 प्रतिशत आरक्षण दिया जाए। इस दौरान जिला प्रवक्ता विकास पाराशर, कार्यालय सचिव श्रीराम दहिया, एससी सेल जिला प्रधान नसीब भारतीय, प्रधान महासचिव बलवान पांचाल, बिल्लू जिला उपाध्यक्ष, वीरेंद्र स्वामी, विजयपाल पहलवान, रामनिवास देशवाल, प्रेम सिंह, रामानंद सहित काफी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सलाह : बच्चों के साथ समय बिताएं पेरेंट्स, पौष्टिक भोजन खिलाएं

अधिक मोबाइल देखने से बच्चे में आता है चिड़चिड़ापन : डॉ. दीपिका

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

कड़कड़ाती ठंड के बीच मौसम जनित बीमारियों खांसी, बुखार, जुखाम आदि के अलावा तनाव इस मौसम की सबसे बड़ी बीमारी साबित हो रहा है। जिसके चलते लोगों में थकान, चिड़चिड़ापन, नींद न आना, जल्दी से गुस्सा आना आदि लक्षण देखने को मिल रहे है। नागरिक अस्पताल में कार्यरत एमडी कम्युनिटी मेडिसन डॉक्टर दीपिका ने बताया कि आवश्यकता से अधिक समय तक टीवी व मोबाइल देखने के कारण खासकर बच्चों में वर्चुअल ओटिज्म की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

स्क्रीन के सामने लंबे समय तक बने रहने के कारण उसके दिमाग के न्यूरांस कनेक्शन पर असर पड़ता है। ऐसे में जब अभिभावक उसे किसी अन्य काम की कहते हैं तो वह उस पर ध्यान नहीं देता तथा मानसिक तनाव में आ जाता है। इसके अलावा वर्किंग पेरेंट्स के व्यस्त रहने के कारण वे भी अपने बच्चों के साथ अधिक समय नहीं बिता पाते जिस कारण बच्चा गुमशुम व उनसे अलग रहने लगता है। यह अकेलापन भी बच्चों को मानसिक तनाव व चिड़चिड़ेपन की ओर ले जा सकता है।

उन्होंने बताया कि इससे बचने के लिए आवश्यक है कि सबसे पहले अभिभावक अपने बच्चों को पौष्टिक भोजन खिलाएं। जहां तक संभव हो अपने बच्चे के साथ थोड़ा समय बिताएं।

सर्दी में तनाव के मरीज भी बढ़े

झज्जर। नागरिक अस्पताल में युवक की स्वास्थ्य जांच करती डॉक्टर दीपिका व नागरिक अस्पताल की ओपीडी में खड़े मरीज और उनके तीमारदार।

बच्चों के साथ दोस्ताना व्यवहार रखें

बच्चों के साथ स्कूल या दिन भर में हुई गतिविधियों पर चर्चा करें। उसके साथ दोस्ताना व्यवहार रखें। उसकी गतिविधियों व जिन बच्चों से मिलता है इसका ख्याल भी रखें। उन्होंने बताया कि घर में जैसा वातावरण होता है बच्चे की मानसिक स्थिति भी वैसी ही रहती है। बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर कहने-सुनने की बजाय देखने का असर अधिक पड़ता है। यदि घर का वातावरण खुशनुमा होगा तो बच्चा भी स्वस्थ और तनाव मुक्त रहेगा। बच्चों को पार्क आदि में घुमाने ले जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दी में आजकल ठंड में बच्चे खांसी, जुकाम व बुखार आदि की चपेट में आ रहे हैं। अस्पताल की ओपीड़ी में इजाफा हुआ है। नियमित आने वाले करीब दो सौ मरीजों में से सत्तर से अस्सी मरीज खांसी, जुकाम व वायरल से पीड़ित पहुंच रहे हैं।

खबर संक्षेप

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री बेदी कल पाटौदा में

झज्जर। हरियाणा सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण कुमार बेदी सोमवार को पाटौदा गांव का दौरा करेंगे। कैबिनेट मंत्री दोपहर बाद गांव पाटौदा स्थित संस्कारम यूनिवर्सिटी में आयोजित सब जूनियर राष्ट्रीय सॉफ्टबॉल चैम्पियनशिप में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे। प्रवक्ता ने बताया कि इस दौरान कैबिनेट मंत्री खिलाड़ियों से संवाद करेंगे तथा उन्हें खेलों के माध्यम से अनुशासन, टीम भावना और राष्ट्रीय गौरव की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे।

कल से लगेगा प्रॉपर्टी टैक्स से संबंधित कैंप

बहादुरगढ़। नगर परिषद द्वारा आधुनिक औद्योगिक संपदा (एमआईई) में स्थित बहादुरगढ़ चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (बीसीसीआई) कार्यालय में संपत्ति कर को लेकर विशेष शिविर लगाया जाएगा ताकि फैक्ट्री मालिकों को प्रॉपर्टी टैक्स से संबंधित किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। बीसीसीआई उपाध्यक्ष नरेंद्र छिकारा के अनुसार जिन फैक्ट्रियों अथवा संपत्तियों का प्रॉपटी टैक्स लंबित है अथवा प्रॉपर्टी आईडी में किसी भी प्रकार की त्रुटि, कमी या समस्या है, तो वे सोमवार 12 जनवरी से शुक्रवार 16 जनवरी तक दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे के बीच इस कैंप में अपनी समस्याओं का समाधान करवा सकते हैं। नप द्वारा गठित विशेष टीम से संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी प्रतिदिन बीसीसीआई भवन में मौजूद रहेंगे।

योजना के तहत पात्र परिवारों को मिलेगी सब्सिडी

झज्जर। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा आमजन को स्वच्छ, सस्ती बिजली उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त योजना प्रभावी रूप से क्रियान्वित की जा रही है। योजना के तहत पात्र परिवारों को अपने घरों की छतों पर रूफ टॉप सोलर पैनल स्थापित करने पर सब्सिडी का लाभ दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि योजना के अंतर्गत हरियाणा प्रदेश के एक लाख जरूरतमंद परिवारों को सौर ऊर्जा से जोड़ने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

महावीर पार्क धर्मशाला में हेल्थ चेकअप कैंप आज

बहादुरगढ़। दिल्ली हॉस्पिटल एवं नर्सिंग होम की ओर से महावीर पार्क की गली नंबर-3 में स्थित धर्मशाला में रविवार को 11 जनवरी को प्रातः 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक फ्री जनरल जांच एवं परामर्श शिविर का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए राजेश खत्री ने बताया कि कैंप में विभिन्न रोगों के विशेषज्ञ आमजन के स्वास्थ्य की गहनता से जांच करेंगे तथा उचित परामर्श भी देंगे।

अवैध हथियार सहित एक युवक गिरफ्तार

बहादुरगढ़। सिटी थाना पुलिस ने अवैध हथियार सहित एक युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान धीरज निवासी चरखी दादरी के रूप में हुई है। उसे गुप्त सूचना के आधार पर डॉ. भीमराव अंबेडकर स्टेडियम के गेट के पास से काबू किया गया। तलाशी में उसके पास दो कारतूस व एक देशी पिस्तौल बरामद हुई। आरोपी के खिलाफ सिटी थाने में केस दर्ज किया गया है।

नर्सिंग स्टाफ को 7 माह से नहीं मिला अलाउंस

बहादुरगढ़। शहर के नागरिक अस्पताल में सुमन प्रधान की अध्यक्षता में नर्सिंग एसोसिएशन की मीटिंग हुई। महासचिव कविता गुलिया ने बताया कि नर्सिंग से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई। उनके अनुसार कैडर का ड्रेस अलाउंस पिछले 7 महीने से नहीं मिला है। नर्सिंग से संबंधित कई प्रोग्राम हैं। उसके बाद भी कैडर पर बार-बार दबाव बनाया जाता है। इस मौके पर मैटन सुदेश मलिक, सीनियर नर्सिंग अधिकारी प्रमिला, कृष्णा, वीना, कैशियर प्रतिभा, सुनिता चौधरी, नवीन, अंजु व शीतल आदि मौजूद रहे।

बड़ी वारदात नाकाम : लड़की के शोर मचाने पर भागे चोर

घर में घुसे दो नकाबपोश चोर नौकरानी का गला दबाया

डीसी ज्वेलरी शॉप का मामला सुलझा नहीं कि एक और वारदात से बना दहशत का माहौल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

शहर में अपराधियों के हौसले बुलंद हैं। अशोक नगर स्थित डीसी ज्वेलरी शॉप में चोरी के मामले में पुलिस भागदौड़ कर ही रही थी कि अब नई बस्ती के एक मकान में दो नकाबपोश वारदात की मंशा से घुस गए। मकान में घुसकर बदमाशों ने मेड का गला दबाया और दीवार की तरफ धक्का दे दिया। घर में मौजूद लड़की की सूझबूझ के चलते वारदात टल गई। उसने शोर मचाया तो बदमाश भाग गए। लाइनपार थाना पुलिस ने मामले में जांच शुरू कर दी है।

वारदात कृष्ण कुमार के मकान में हुई है। पुलिस को दी शिकायत कृष्ण की बेटी शिखा गुप्ता ने बताया कि शुक्रवार शाम को परिवार के सदस्य कहीं बाहर थे। इसी दौरान करीब पौने आठ बजे दो नकाबपोश वारदात की मंशा से मकान के अंदर घुस आए। हमारे घर में काम करने वाली महिला ने देखा तो शोर मचाया। इस पर नकाबपोशों ने उसका गला दबा दिया और फिर दीवार की तरफ धक्का दे दिया। फिर उसने दरवाजा बंद कर लिया। बदमाशों ने हमारा अंदर वाला दरवाजा तोड़ने का प्रयास भी किया। शोर मचाने पर वे भाग गए। उधर, सूचना पाकर लाइनपार थाने से पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। शिखा की शिकायत पर पुलिस ने संबंधित धाराओं के तहत केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है। जल्द ही मामले को सुलझाने की बात कही जा रही है।

डीसी ज्वेलर्स पर चोरी की वारदात में पुलिस खंगाल रही कैमरे

बहादुरगढ़। अशोक नगर स्थित डीसी ज्वेलर्स पर हुई आभूषण चोरी की वारदात को सुलझाने में पुलिस की कई टीमें भागदौड़ रही हैं। अब तक काफी सीसीटीवी कैमरे खंगाले जा चुके हैं लेकिन फिलहाल चोरों का कुछ सुराग नहीं लग पाया है। हालांकि पुलिस द्वारा जल्द वारदात सुलझाने की बात कही जा रही है। डीसी ज्वेलर्स से करीब सात लाख रुपये के सोने चांदी के आभूषण चुराए गए हैं। गनीमत रही कि पड़ोसियों ने ऊपर से चोरों पर ईंट बरसा दी, अन्यथा तिजोरी खुलती तो और अधिक नुकसान हो सकता था। कैमरे में छह चोर नजर आए थे और वे फाटक की तरफ भागे थे। प्रारंभिक तौर पर सामने आया है कि आरोपी स्टेशन की तरफ गए। इसके बाद किस तरफ रुख किया, ये स्पष्ट नहीं है। मामले की तह तक जाने के लिए लाइनपार थाना और सीआईए सहित कई टीमें भागदौड़ कर रही हैं। लाइनपार, रेलवे स्टेशन सहित आसपास काफी कैमरे खंगाले जा चुके हैं और यह सिलसिला अब भी जारी है।

कोमल ज्वेलर्स पर हुई चोरी में 1 गिरफ्तार

बहादुरगढ़। तीन महीने पहले कोमल ज्वेलर्स पर हुई ढाई करोड़ के गहनों की चोरी के मामले में पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। मामले में पुलिस की एंटी व्हीकल थेफ्ट टीम ने एक आरोपी को फरीदाबाद से गिरफ्तार किया है। आरोपी को पूछताछ के लिए 5 दिन के रिमांड पर लिया गया है। रिमांड अवधि में पुलिस आरोपी से उसके अन्य साथियों के बारे में जानकारी जुटाएगी। गत आठ अक्टूबर की सुबह करीब पौने चार बजे यह वारदात हुई थी। कार में सवार होकर आए पांच चोरों ने शटर को उखाड़ा और अंदर से करीब ढाई करोड़ के सोने-चांदी के आभूषणों पर हाथ साफ कर गए थे। मामले में तब से पुलिस की कई टीमें भागदौड़ कर रही थी। मामले में जानकारी देते हुए एवीटी इंचार्ज एसआई जितेंद्र सिंह ने बताया कि लगातार इस मामले में गंभीरता से काम किया जा रहा था। अब एएसआई प्रवीण हुड्डा की टीम ने एक आरोपी को फरीदाबाद से गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान सोनू निवासी तुगलकाबाद नई दिल्ली के रूप में हुई है। आरोपी 5 दिन के रिमांड पर लिया गया है। इस दौरान आरोपी से आभूषणों की रिकवरी तथा उसके साथियों की जानकारी जुटाई जाएगी।

रिलायंस परिसर से लाखों की केबल चोरी

बहादुरगढ़। बादली स्थित रिलायंस बायो एनर्जी लिमिटेड परिसर में चोरी की वारदात हो गई। चोर यहां से तीन लाख 40 हजार रुपये की कीमत की तार चुरा ले गए। कंपनी प्रतिनिधियों की ओर से पुलिस को शिकायत दे दी गई है। पुलिस को दी शिकायत में एसके सुमन ने कहा है कि हमारी जीपीएस रिन्यूएबल्स कंपनी बादली स्थित रिलायंस बायो एनर्जी में कार्यरत है। गत 27 दिसंबर को परिसर में से हमारी 1300 मीटर केबल चोरी हो गई। इससे पहले भी कई बार चोरी की वारदात हो चुकी है।

मांडोठी के मंदिर परिसर से गाड़ी ले गए चोर

बहादुरगढ़। गांव मांडोठी से एक गाड़ी चोरी हो गई। वाहन मालिक ने पुलिस को शिकायत दे दी है। मांडोठी निवासी सुधीर का कहना है कि उसके पास एक ओमनी वैन गाड़ी है। खराब होने के कारण गाड़ी करीब तीन महीने से दादा बूढ़ा मंदिर परिसर के ग्राउंड में खड़ी की थी। शुक्रवार को देखा तो गाड़ी नहीं मिली। अपने स्तर पर जांच की लेकिन कुछ पता नहीं चला। कोई अज्ञात शख्स चुरा ले गया है। पुलिस तलाशने में मदद करे। उधर, मांडोठी चौकी पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

घर से बुलाकर की हैवानियत

दोस्तों ने युवक को डंडों से पीटा, वीडियो की वायरल

बहादुरगढ़। डंडे से की जा रही युवक की पिटाई। फोटो : हरिभूमि

- पांच मिनट तक बरसाते रहे डंडे पुलिस ने केस दर्ज किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

गांव जसोरखेड़ी के निवासी एक युवक की उसके दो दोस्तों ने डंडों से पिटाई कर दी। इतना ही नहीं, मारपीट के दौरान उसकी वीडियो बनाई और जान से मारने की धमकी दी। मारपीट की वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल है। आसौदा थाना पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वारदात जसोरखेड़ी के निवासी जतिन के साथ हुई है। जतिन का कहना है कि शाम को वह अपने घर पर था। इसी दौरान दोस्त रजनेश आया और हम गांव के अड्डे पर चले गए। अड्डे पर आसौदा के हरीश व नितिन मिले। हरीश ने रजनेश की बाइक ले ली। फिर हरीश, नितिन व मैं आसौदा के निकट पानी की टंकी पर आ गए।

इसी दौरान हरीश व नितिन ने गंभीर आरोप लगाते हुए डंडों से मारपीट शुरू कर दी। बेरहमी से मारपीट की। भागने लगा तो जमीन पर लेटा कर पीटा। इतना ही नहीं, मारपीट करते हुए की वीडियो भी बना ली। पांच मिनट से अधिक समय तक डंडों से उसको पीटा गया, जिसकी वीडियो क्लिप वायरल है। आरोपी कहने लगे कि दोबारा गांव आसौदा में आया या फिर मारपीट की शिकायत पुलिस को दी तो जान से मार देंगे। वहीं, पुलिस का कहना है कि शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर लिया है। मामले में जांच की जा रही है।

सिलेंडर की गैस पाइप में लीकेज से गूंगा हलवाई की दुकान में लगी आग

- पड़ोस में लगे अग्निशमन यंत्रों की मदद से आग पर पाया काबू

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

झज्जर। एकत्रित भीड़ व लोगों से घटना की जानकारी लेते हुए पुलिसकर्मी।

कस्बा बेरी में गैस सिलेंडर के लीकेज पाइप के कारण एक मिष्ठान भंडार में आग लग गई। गणीमत यह रही कि समय पर कर्मचारियों का ध्यान चला गया और उन्होंने सूझबूझ दिखाते हुए अग्निशमन यंत्र के जरिए शीघ्र ही आग पर काबू पा लिया। जानकारी के अनुसार मेन बाजार स्थित गूंगा हलवाई की दुकान में रोजमर्रा की तरह जब कारीगर मिष्ठान बनाने में व्यस्त थे। इसी दौरान दोपहर बाद करीब तीन बजे अचानक गैस सिलेंडर ने आग पकड़ ली। सिलेंडर में लगी आग के कारण जहां वहां के काम कर रहे कर्मचारियों में अफरा-तफरी मच गई। वहीं आसपास के दुकानदारों ने भी आग फैलने के डर से अपनी दुकानें बंद कर दीं। इसके बाद दुकानदारों ने पड़ोस में लगे अग्निशमन यंत्र की सहायता से सूझबूझ का परिचय देते हुए आग पर काबू पाया। सूचना मिलने के बाद पुलिस भी मौके पर पहुंची तथा आगजनी की घटना की जानकारी ली।

साढ़े 5 लाख में होगा शास्त्री पार्क का रेनोवेशन

- चेयरपर्सन सरोज राठी ने नारियल फोड़कर कार्य की शुरुआत करवाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। पार्क रेनोवेशन के काम का शुभारंभ करती चेयरपर्सन व अन्य। फोटो : हरिभूमि

शहर के नागरिक अस्पताल के समीप स्थित लाल बहादुर शास्त्री पार्क का जल्द ही कायाकल्प किया जाएगा। नगर परिषद ने लगभग साढ़े 5 लाख रुपये की लागत से पार्क के रेनोवेशन कार्य की शुरुआत कर दी है। शनिवार को चेयरपर्सन सरोज राठी ने विधिवत नारियल फोड़कर रेनोवेशन कार्य का शिलान्यास किया। उन्होंने बताया कि परिषद की ओर से करीब साढ़े तीन करोड़ रुपये की लागत से शहर के लगभग सभी पार्कों का रेनोवेशन किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि सीएम नायब सैनी के नेतृत्व में भाजपा शासन में प्रदेशभर में विकास कार्यों को गति मिल रही है। सरकार की जनहितैषी नीतियों और सहयोग से नगर परिषद को शहर के पार्कों, सड़कों व मूलभूत सुविधाओं के विकास के लिए पर्याप्त बजट मिल रहा है। कार्यक्रम में पालेराम शर्मा, राजेश तंवर, राजू, मनमोहित गुप्ता, सुमित, मोनू, नरेंद्र, सुमन, अनिता व सुदेश आदि मौजूद थे।

फायरिंग मामले में तीसरा आरोपी काबू

- मॉडर्न स्कूल के बाहर तीन लोगों ने की थी गोलीबारी, दो दिन के रिमांड पर लिया

बहादुरगढ़। मॉडर्न स्कूल के बाहर हुई फायरिंग के मामले में पुलिस ने तीसरे आरोपी को भी गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी को दो दिन के रिमांड पर लिया गया है। उसकी निशानदेही पर वारदात में इस्तेमाल की गई गाड़ी व हथियार बरामद किया गया है। गत तीन अक्टूबर की रात को यह वारदात हुई थी। सीसीटीवी में कार में सवार होकर आए तीन युवक देखे गए। जिनमें से एक युवक ने दोनों हाथों से ताबड़तोड़ फायरिंग की थी। मामले में गोली चलाने वाला मुख्य आरोपी सतेंद्र व दीपेंद्र पहले ही गिरफ्तार हो चुके हैं। उनसे पुलिस ने वारदात में इस्तेमाल की गई पिस्तोल व मोबाइल बरामद किए थे। अब तीसरे आरोपी वतन निवासी कबलाना को भी गिरफ्तार कर लिया गया है। आरोपी दो दिन के रिमांड पर है।

मुख्यमंत्री शहरी आवास योजना में होगी वेरिफिकेशन

- आवेदन में दिए गए पते पर नहीं मिले 50 आवेदक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

अरुण सागू

वर्ष 2023 में मुख्यमंत्री शहरी आवास योजना के अंतर्गत फ्लैट के लिए आवेदन करने वाले लोगों की वेरिफिकेशन की जाएगी। योजना इंचार्ज अरुण सागू ने बताया कि आवेदकों को बीती आठ जनवरी तक फाइल जमा कराने तक का समय दिया गया जिसे अब आगामी मंगलवार तक कर दिया गया है। उन्होंने फ्लैट का आवेदन करने वाले लोगों से आह्वान किया कि वे अपनी फिजिकल वेरिफिकेशन कराकर योजना का लाभ उठाएं। उन्होंने कहा कि शहर में करीब चार सौ लोगों द्वारा योजना के अंतर्गत फ्लैट के लिए आवेदन किया गया था। इसके अलावा प्लाट के लिए आवेदन करने वाले सत्तर लोगों की फिजिकल वेरिफिकेशन शेष है, जिनमें से पचास आवेदक ऐसे हैं जो आवेदन में दिए गए पते पर ही नहीं मिले। उन्होंने बताया कि वेरिफिकेशन के लिए आवेदक का परिवार पहचान पत्र, आधार कार्ड, आवेदन फार्म की कॉपी चेक की जाएगी।

छत से गिरकर प्रवासी की मौत

- पांव फिसलने से नीचे गिरकर मौत होने की आशंका

बहादुरगढ़। लाइनपार के छोटूराम नगर में छत से गिरकर एक प्रवासी व्यक्ति की मौत हो गई है। पुलिस ने पोस्टमार्टम करा शव परिजनों को सौंप दिया है। मामले में पुलिस द्वारा घटना को संयोग मानकर कार्रवाई की गई है। मृतक की पहचान करीब 50 वर्षीय मिथलेश कुमार के रूप में हुई है। मूलतः बिहार का मिथलेश पिछले कुछ समय से यहां छोटूराम नगर में रह रहा था। जानकारी के अनुसार, शुक्रवार की रात को वह छत पर गया था। संभवतः इसी दौरान पांव फिसलने से वह छत से गिर गया। जब तक किसी की नजर पड़ती, देर हो चुकी थी। अस्पताल में लेकर गए तो उसे मृत घोषित कर दिया गया। सूचना पाकर लाइनपार थाने से पुलिस अस्पताल में पहुंची और परिजनों के बयान लिए। शनिवार को पोस्टमार्टम करा शव परिजनों को सौंप दिया गया।

संस्कारम स्कूल का छात्र रक्षित जांगड़ा एसएसबी में चयनित

- लिखित परीक्षा के साथ-साथ एसएसबी के 5 दिवसीय साक्षात्कार की करवाई गई ट्रेनिंग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

- एसएसबी में चयनित संस्कारम स्कूल का छात्र रक्षित जांगड़ा।

संस्कारम पब्लिक स्कूल खातीवास के छात्र रक्षित जांगड़ा का चयन सर्विस सिलेक्शन बोर्ड में हुआ है। रक्षित द्वारा भारतीय सेना में अधिकारी बनने की दिशा में पार किए गए इस महत्वपूर्ण पड़ाव के बाद विद्यालय में खुशी की लहर है। संस्कारम ग्रुप ऑफ स्कूल्स के चेयरमैन डॉक्टर महिपाल ने कहा कि विद्यालय में रक्षा सेवाओं के प्रति विद्यार्थियों को शुरू से ही तैयार किया जाता है। उनके संस्थान में केवल शैक्षणिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि एनडीए की लिखित परीक्षा के साथ-साथ एसएसबी के पांच दिवसीय कठिन साक्षात्कार के लिए अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा विशेष ट्रेनिंग और पर्सनेलिटी डेवलपमेंट सत्र आयोजित किए जाते हैं। रक्षित का चयन इसी सुनियोजित प्रशिक्षण का परिणाम है। रक्षित के पिता विकास और उनके परिजनों ने भी इस गौरवशाली क्षण पर विद्यालय प्रबंधन का आभार जताया।

68वें स्कूल गेम्स में झज्जर ने किया शानदार प्रदर्शन

शूटिंग में अंकित ने गोल्ड व वंशिका ने जीता ब्रॉन्ज मेडल

अभिनव शूटिंग अकादमी के युवा खिलाड़ी भोपाल में छाए

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। पदक विजेता अंकित व वंशिका के साथ प्रतिभागी शूटर।

अभिनव शूटिंग अकादमी के दो होनहार खिलाड़ियों ने 68वें स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया में शानदार प्रदर्शन कर अकादमी का नाम रोशन किया। अंडर-14 आयुवर्ग में 10 मीटर एयर पिस्टल टीम इवेंट में दिल्ली की ओर से खेलते हुए अंकित तहलान ने गोल्ड मेडल जीता। जबकि अंडर-17 वुमन कैटेगरी में हरियाणा की ओर से वंशिका दलाल ने ब्रॉन्ज मेडल हासिल किया। मध्यप्रदेश के भोपाल में 5 जनवरी से 9 जनवरी तक हुई प्रतियोगिता में जीतने के बाद अब ये दोनों खिलाड़ी 13 से 23 जनवरी तक महाराष्ट्र के पुणे में होने वाली इंडियन शूटिंग टीम ट्रायल्स में भाग लेंगे। कोच प्रदीप कुमार ने खिलाड़ियों की मेहनत की सराहना करते हुए बताया कि अकादमी से कुल 5 खिलाड़ी महाराष्ट्र रवाना होंगे।

अंजलि ने 137 किलो वजन उठाकर जीता गोल्ड

बहादुरगढ़। महाराष्ट्र के संभाजी नगर में आयोजित स्कूली नेशनल गेम्स में वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता के दौरान बहादुरगढ़ के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में 53 किलोग्राम भारवर्ग में अंजलि ने बेहतरीन ताकत और तकनीक का परिचय देते हुए कुल 137 किलोग्राम वजन उठाकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। अंजलि की इस उपलब्धि से उनके परिवार, कोच और क्षेत्र में खुशी की लहर दौड़ गई। वहीं 48 किलोग्राम भार वर्ग में सोना ने भी कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच अच्छा प्रदर्शन किया। सोना ने 100 किलोग्राम वजन उठाते हुए चौथा स्थान प्राप्त किया। कोच धर्मेंद्र ने भविष्य में बेहतर परिणाम की उम्मीद जताई। खेल प्रेमियों ने भी बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

नेशनल ग्रैपलिंग कुश्ती में पहलवानों ने जीते पदक

बहादुरगढ़। शहीद ब्रिगेडर होशियार सिंह स्टेडियम के पहलवानों ने विशाखापटनम में आयोजित ग्रैपलिंग कुश्ती नेशनल चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन किया। पहलवान साहिल दहिया ने 110 किलो भारवर्ग में स्वर्ण पदक जीता। राहुल ने 67 किलोग्राम रजत पदक जीता। पीयूष ने 92 किलोग्राम कांस्य पदक जीता। अखाड़ा संचालक सोल्हा पहलवान ने बताया कि अखाड़े के पहलवानों ने पहले भी देश विदेश में पदक जीत कर प्रदेश का नाम रोशन किया है। शनिवार को अखाड़े में पहुंचने पर पहलवानों का स्वागत किया गया। इस मौके पर महावीर मास्टर बराही, बलवान सिंह, मास्टर सुरेश छिल्लर, हरिओम अहलावत, मनोज बागड़ी, संदीप पहलवान छारा, राकेश बामड़ोली, मनजीत पहलवान, धर्मपाल राठी, कृष्ण पहलवान व अनिल प्रधान आदि ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

K.R. MANGALAM

World School
Bahadurgarh

ENGAGE.
LEARN.
INNOVATE.

ADMISSIONS OPEN 2026-27

Nursery to Grade IX & XI
(Play Group Also Available)

Engaging Minds | Inspiring Innovation | Building Balance

At K.R. Mangalam World School, Bahadurgarh, education extends beyond classrooms. Established in 2023 on a 5.5-acre campus, the school nurtures curiosity, creativity, and character through a technology-driven learning environment, guided by the motto **Engage. Learn. Innovate.**

Distinctive Learning Approach

- **Experiential & STEAM Learning:** Project-based education fostering innovation, critical thinking, and collaboration.
- **Aerobay Composite Skill Lab:** Hands-on exposure to aerospace, robotics, drones, and emerging technologies.
- **PSPE & Signature Programmes:** Holistic development through fitness, emotional intelligence, and skill-focused modules.
- **Shooting Range Facility:** Professional training space promoting discipline, focus, and sporting excellence.

Campus, Facilities & Learning Environment

- **State-of-the-Art Campus:** Modern 5.5-acre campus supporting academic and holistic growth.
- **Technology-Enabled Learning:** Interactive spaces that promote creativity and hands-on learning.
- **Balanced Learning Spaces:** Facilities that equally support academics, activities, and physical development.

Co-Curricular Activities & Sports

- **Outdoor Sports:** Football, basketball, cricket, athletics, lawn tennis, and more to build fitness and teamwork.
- **Indoor Activities:** Chess, carrom, badminton, foosball, and skating to sharpen focus and strategy.
- **Well-Rounded Growth:** A healthy balance of academics and activities that builds confidence and resilience.
- **Skill-Based Enrichment:** Clubs and activities that nurture leadership, creativity, and life skills.

The KRM Legacy of Excellence

40,000+ Students Studying | 50,000+ Alumni Members | 4,000 Faculty On Board

K.R. Mangalam stands as a trusted name in education. Our seamless admission process, modern infrastructure, and value-driven philosophy empower every learner to excel and lead with purpose.

Ranked No. 1

INNOVATORS CATEGORY BY TIMES SCHOOL SURVEY 2025

admission@krmangalambahadurgarh.com
www.krmangalambahadurgarh.com
Sector 2, Near Gauri Shankar Mandir, Bahadurgarh, Haryana 124507

9549899503

School is Open for Admissions on All Days

G.K.- II | Vikaspuri | Kailash Colony | Paschim Vihar | Vaishali | Greater Noida | Faridabad | Gurugram | Bahadurgarh | Panipat | G.K.- I (IB) | Lucknow | Indirapuram

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 11 जनवरी 2026

भारतीय सांस्कृतिक विरासत को मिली वैश्विक पहचान

पिछला साल भारतीय कला, साहित्य व संस्कृति के लिए बहुत महत्वपूर्ण और उत्साहवर्धक रहा। साल के शुरुआत में यूनेस्को ने भारत के दो प्राचीन ग्रंथों 'श्रीमद्भगवद्गीता' और 'नाट्यशास्त्र' को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया, जोकि भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को वैश्विक पहचान व मान्यता देता है। वहीं साल के अंतिम महीने में यूनेस्को ने भारत के प्रमुख पर्व दीपावली को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल किया। ये उपलब्धियां भारत की कला, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक विरासत को विश्व में एक विशेष स्थान व मान्यता प्रदान करती हैं। कला-संस्कृति से जुड़े दिग्गज, बता रहे हैं वे इस उपलब्धि को किस तरह देखते हैं?

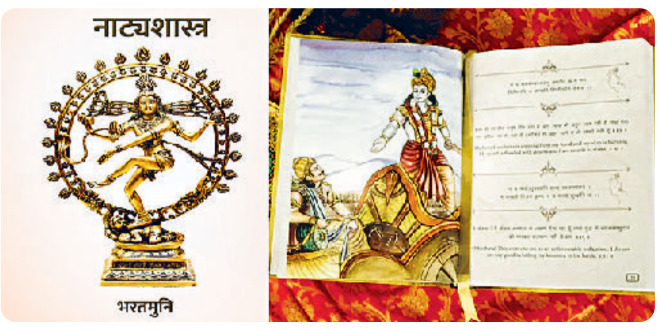

{ आवरण कथा }

यह देश के लिए सांस्कृतिक पुनर्जागरण का ऐतिहासिक क्षण है

डॉ. संध्या पुरेचा अध्यक्ष-संगीत नाटक अकादमी

यूनेस्को द्वारा प्राचीन ग्रंथों 'नाट्यशास्त्र' और 'श्रीमद्भगवद्गीता' का पंजीकरण तथा दीपावली का भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में घोषित होना, भारत के लिए अत्यंत गौरव, आत्म-सम्मान के साथ ही सांस्कृतिक पुनर्जागरण का ऐतिहासिक क्षण है। यह केवल अंतरराष्ट्रीय मान्यता नहीं बल्कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा, दार्शनिक दृष्टि और जीवन मूल्यों की वैश्विक स्वीकृति है।

'नाट्यशास्त्र' भारतीय कलाओं की आत्मा है। यह रंगमंच, नृत्य और संगीत का शास्त्र होने के साथ-साथ मानव भावनाओं, रस अभिव्यक्ति और सौंदर्यबोध का वैज्ञानिक और सार्वकालिक ग्रंथ है। वहीं 'श्रीमद्भगवद्गीता' कर्म, धर्म, भक्ति और ज्ञान के माध्यम से मानव जीवन के लिए एक सार्वभौमिक दर्शन प्रस्तुत करती है। इन दोनों ग्रंथों को यूनेस्को में स्थान मिलना यह सिद्ध करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा आज भी संपूर्ण मानवता के लिए प्रासंगिक और मार्गदर्शक है। दीपावली का अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता पाना भारत की लोक-आस्थाओं और सांस्कृतिक चेतना की वैश्विक स्वीकृति है। यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि सामाजिक एकता, नैतिक मूल्यों, आशा और सद्भाव का उत्सव है, जो संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांधता है और मानवता को सकारात्मक ऊर्जा का संदेश देता है। इन उपलब्धियों का भारत की सांस्कृतिक कूटनीति, कला, शिक्षा, अनुसंधान, पर्यटन तथा परंपरागत ज्ञान के संरक्षण और संवर्धन पर दूरगामी प्रभाव होगा। इससे हमारी युवा पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़ने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के वैश्विक महत्व को भी समझ सकेगी। संगीत नाटक अकादमी भी इस दिशा में सतत प्रयास करेगी कि हमारी परंपराएं जीवंत बनी रहें, अगली पीढ़ियों तक पहुंचे और वैश्विक मंच पर गरिमापूर्ण ढंग से प्रस्तुत हों। *

भारतवासियों के लिए विश्वस्तर की यह बड़ी उपलब्धि है

रोहित त्रिपाठी अभिनेता-निर्देशक, अध्यक्ष-अपस्टेज आर्ट ग्रुप

नाट्यशास्त्र को यूनेस्को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल करना दर्शाता है कि हमारा नाट्यशास्त्र प्राचीन नाट्यमंच पद्धति है। पूरे विश्व में यह स्वीकारोक्ति हुई है कि नाट्यशास्त्र वह ग्रंथ है, जिसमें हमें मंच पर प्रस्तुत करने की सारी विधाएं प्राचीन काल से बताई गई हैं। इसे अब यानी लंबे इंतजार के बाद वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया गया, जबकि यह काम बहुत पहले हो जाना चाहिए था। विश्व की यह स्वीकारोक्ति हमें बताती है कि विश्व के जितने भी महान रंगकर्मी हुए, उन्होंने कहीं न कहीं हमारे नाट्यशास्त्र से गहन अध्ययन किया और अपनी एक थ्योरी बनाकर प्रकाशित की। यह बहुत खुशी की बात है कि अभी हाल ही में दीपावली को अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में शामिल किया गया। इससे प्रतीत होता है कि हमारी सनातन परंपरा और उसके उत्सव विश्व को आगे ले जाने में कितनी मदद करते हैं। यह हम रंगकर्मियों के लिए भारतवासियों के लिए विश्वस्तर की एक बड़ी उपलब्धि है। स्वामी विवेकानंद ने इसीलिए कहा था कि समस्त विश्व के लोग हमारे भाई-बहन हैं। हम विश्व के कल्याण के लिए काम करते हैं। यह हम सभी रंगकर्मियों के लिए गर्व की बात है कि हमारे पास नाट्यशास्त्र है। बस उसे सरलतम बनाकर प्रस्तुत करने के लिए हमारे देश के विद्वानों को आगे आना चाहिए ताकि हर रंगकर्मी तक वह उनकी सरल भाषा में पहुंच सके। वे उसे समझकर अपना ज्ञानवर्धन कर सकें। *

ये उपलब्धियां हासिल होना हर भारतीय के लिए गौरव का पल है

पद्मश्री डॉ. भरत गुप्त
कार्यकारी उपाध्यक्ष-एनएसडी

'श्रीमद्भगवद्गीता' व 'नाट्यशास्त्र' को यूनेस्को द्वारा मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया जाना, हर भारतीय के लिए गौरव का पल है। 'श्रीमद्भगवद्गीता' एक प्राचीन ग्रंथ है, जिसे सदियों से खूब पढ़ा जा रहा है। 'नाट्यशास्त्र' को लेकर मुझे विशेष प्रसन्नता है, क्योंकि पश्चिम के लोग अभी भी इस बात को नहीं जानते कि 'नाट्यशास्त्र' रंगमंच की व्याख्या है और इतनी व्यापक व्याख्या और कहीं नहीं है। बेशक कुछ पश्चिम के लोग नाट्यशास्त्र के विषय में जानते हैं लेकिन अब और विदेशी इसे पढ़ेंगे। दोनों ग्रंथों को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में रखवाने में आईजीएनसीए की बड़ी भूमिका रही। मैं आईजीएनसीए में ट्रस्टी हूं, हमारी पूरी टीम इस काम में लगी थी।

'श्रीमद्भगवद्गीता' दर्शन का ग्रंथ है, जिसमें कर्म, योग, ज्ञान और भक्ति की व्याख्या है। जीवन में क्या करना है, जीवन कैसे, किन मूल्य को लेकर जीना है, आप कैसे कर्म करेंगे? यह हमें गीता सिखाती है। इस तरह 'श्रीमद्भगवद्गीता' एक योद्धा की किताब है। उस योद्धा की मानसिकता की मनोदशा, हम सभी की जिंदगी में कभी न कभी किसी न किसी रूप में आती रहती है। गीता हमें सिखाती है कि श्रेष्ठ जीवन कैसा हो? जीवन जैसा भी है, अच्छा, बुरा, कुछ ऊंचे पात्र, कुछ नीचे, नायक, खलनायक इन सबको दिखाने वाला ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' है। गीता के संदेश को हम बच्चे से लेकर बुजुर्गों तक नाटक के माध्यम से पहुंचा सकते हैं। इन ग्रंथों को जनता तक पहुंचाना बहुत जरूरी है।

दीपावली के संदर्भ में यही कहूंगा कि यूनेस्को ने इसे सांस्कृतिक धरोहर माना है। यह गर्व की बात है लेकिन अब हमें देखना होगा कि क्या हम दीपावली को उसके मूल स्वरूप में मना रहे हैं? साथ ही विजया दशमी के महत्व को समझें, तभी दीपावली का सही अर्थ समझ आएगा। *

हम सांस्कृतिक पुनर्जागरण का युग देख रहे हैं

डॉ. सच्चिदानंद जोशी सदस्य सचिव-इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र

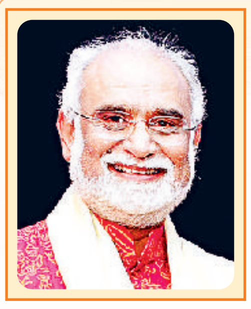

हम सांस्कृतिक पुनर्जागरण का युग देख रहे हैं। स्वतंत्रता से पूर्व हम गुलाम मानसिकता में जीते रहे इसलिए हमें हमारी सांस्कृतिक विरासत व वैभव का अहसास नहीं हुआ। हमारी अस्मिता बोध को जगाने का काम इस समय हो रहा है। यह निरंतर प्रक्रिया चल रही है। विरासत भी विकास भी, का मंत्र लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं। इस दृष्टि से देखें तो पिछला एक साल उसी निरंतर किए जा रहे कार्यों का गौरवशाली साल रहा। पहले हमने 'नाट्यशास्त्र' व 'श्रीमद्भगवदगीता' को यूनेस्को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में दर्ज कराया। यह इस बात को रेखांकित करता है कि हमारी परंपराएं कितनी पुरानी हैं, हमारी सांस्कृतिक जड़ें कितनी गहरी हैं। श्रीमद्भगवद्गीता को काफी पहले से ही विश्वभर में बहुत आदर, सम्मान के साथ पढ़ा जाता रहा है। अब जब हमारा नाट्यशास्त्र वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल होता है तो हमें पूरे विश्व को यह बताने का अवसर मिलता है कि ऐसा शास्त्र हमारे यहां दो हजार साल पूर्व लिखा गया। तब जबकि विश्व की अधिकांश सभ्यताएं इस पूरे शास्त्र के बारे में जानती भी नहीं थीं। इस दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण है। दीपावली का अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर में शामिल होना, हमें विश्व को यह बताने का अवसर देता है कि हमारे देश में पर्व मनाने की निरंतरता कितनी बड़ी है। साथ ही यह भी कि हमारे पर्व किस तरह से सर्वसमावेशी हैं। हमने किस तरह अपनी पुरातन परंपराओं को मान्यताओं को बचाकर रखा है और आगे तक बचाने का संकल्प किया है। इस तरह विश्वस्तर पर ये तीनों उपलब्धियां हमारे लिए बहुत मायने रखती हैं। *

प्रस्तुतिः रेनू खंतवाल

विशेषः राष्ट्रीय युवा दिवस, 12 जनवरी

स्वामी विवेकानंद ने न केवल भारत की सांस्कृतिक श्रेष्ठता को संपूर्ण विश्व में प्रतिष्ठित किया, यहां की धार्मिक चेतना का पुनर्जागरण करने में भी भूमिका निभाई। यही नहीं लगभग सवा सदी से अधिक समय गुजरने के बाद भी स्वामी विवेकानंद, देश के युवाओं के लिए आदर्श और अद्वितीय मार्गदर्शक बने हुए हैं।

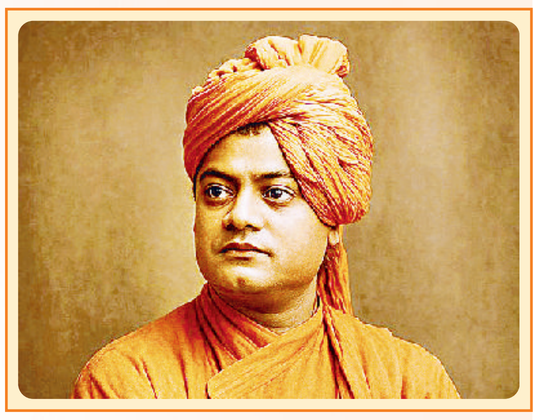

स्वामी विवेकानंद आज भी हैं युवाओं के आदर्श-मार्गदर्शक

{ प्रेरक व्यक्तित्व
शिखर चंद जैन }

ब्रिटिश शासनकाल के समय पश्चिमी देश, भारत की उपेक्षा किया करते थे। दरअसल, वे हमारे देश की अद्वितीय सनातन संस्कृति और गौरवमयी सभ्यता से परिचित ही नहीं थे। ऐसे समय में 12 जनवरी 1863 को जन्मे स्वामी विवेकानंद (बचपन का नाम नरेंद्र) ने युवावस्था में ही दुनिया में भारतवर्ष का मान बढ़ाने में अभूतपूर्व भूमिका निभाई।

भारतीय संस्कृति को दिलाया मानः स्वामी विवेकानंद, भारत के पहले युवा संत थे, जिन्होंने सनातन धर्म का संदेश विश्व भर में फैलाया और इसकी महत्ता पूरे विश्व को समझाई। उन्होंने विश्व में सनातन मूल्यों, धर्म और भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को स्थापित किया और इसका मान बढ़ाया। 11 सितंबर, 1893 को अमेरिका स्थित शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में उनके भाषण ने दुनिया भर के धार्मिक और आध्यात्मिक संतों पर एक अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने अपने उद्बोधन की शुरुआत जब 'मेरे प्यारे अमेरिकी बहनों और भाइयों' से की तो पूरा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इस पर उन्होंने कहा, 'जिस गर्मजोशी और सौहार्दपूर्ण माहौल में मेरा स्वागत किया है, उससे मेरा हृदय गद-गद है। भारत भूमि के सभी समुदायों, वर्गों, लाखों-करोड़ों भारतीयों की तरफ से मैं आपको कोटि-कोटि धन्यवाद देता हूं।' उन्होंने यह भी कहा, 'मुझे उस धर्म व राष्ट्र से संबंध रखने पर गर्व है, जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिकता का पाठ सिखाया। हम न केवल सार्वभौमिक सहनशीलता में विश्वास रखते हैं बल्कि सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं। मुझे भारतीय होने पर गर्व है, जिसने विभिन्न राष्ट्रों के पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है।'

धार्मिक सहिष्णुता के पक्षधरः भारतीय संस्कृति के मूल भाव धर्मनिरपेक्षता को वे बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने सदैव सार्वजनिक संस्कृति के रूप में धार्मिक सहिष्णुता का समर्थन किया, क्योंकि वे सद्भाव और शांति के पक्षधर थे। स्वामीजी, जाति या धर्म के आधार पर बिना किसी भेदभाव के लोगों की सेवा करने को सर्वश्रेष्ठ मानव धर्म मानते थे। उनके विचारों में धर्मनिरपेक्षता के संबंध में तुष्टिकरण के लिए कोई स्थान नहीं था। 1893 में विश्व धर्म संसद में ऐतिहासिक व्याख्यान देने के बाद उन्होंने यूरोप का भी दौरा किया। स्वामी विवेकानंद ने देश की महान आध्यात्मिक विरासत को आगे बढ़ाते हुए एकता की भावना को प्रसारित किया।

मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धाः स्वामीजी जब अमेरिका और ब्रिटेन की यात्रा कर चार साल बाद भारत लौटे तो उन्होंने यहां की पवित्र भूमि को साष्टांग दंडवत कर नमन किया। उनके मन में मातृभूमि के प्रति अपार श्रद्धा और प्रेम था। वे कहते थे कि मातृभूमि का कण-कण पवित्र और प्रेरक होता है, इसलिए इस धूलि में रमा हुआ हूं।

परम विद्वान-विनम्र व्यक्तित्वः स्वामी विवेकानंद के बारे में नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने लिखा है, 'स्वामीजी इसलिए महान हैं कि उन्होंने पूर्व और पश्चिम, धर्म और विज्ञान, अतीत और वर्तमान में सामंजस्य स्थापित किया, देशवासियों ने उनकी शिक्षाओं से अभूतपूर्व आत्म-सम्मान, आत्मनिर्भरता और आत्म-विश्वास आत्मसात किया है।' इसी ऐतिहासिक संबोधन से प्रभावित होकर प्रख्यात ब्रिटिश इतिहासकार ए.एल. बाशम ने कहा था, 'स्वामी विवेकानंद जी को भविष्य में आधुनिक दुनिया के प्रमुख निर्माता के रूप में हमेशा याद किया जाएगा।'

युवाओं के प्रेरणास्रोतः स्वामी विवेकानंद मानते थे कि युवाशक्ति ही देश, समाज और दुनिया को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ा सकती है। उन्होंने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा था 'उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए।' वे युवाओं से भरपूर आशा और उम्मीद रखते थे। उनके लिए युवा पीढ़ी ही परिवर्तन की अग्रदूत हो सकती है। वे चाहते थे कि युवाओं में विशाल हृदय के साथ मातृभूमि और जनता की सेवा करने की दृढ़ इच्छा शक्ति हो। वे युवाओं का आह्वान करते हुए कहते थे, 'देश में जहां भी प्लेग या अकाल का प्रकोप है, या जहां भी लोग संकट में हैं, आप वहां जाएं और उनके दुःखों को दूर करें। आप पर देश के भविष्य की उम्मीदें टिकी हुई हैं।'

स्वामी विवेकानंद, आधुनिक भारत के उन महानतम आध्यात्मिक गुरुओं और विचारकों में से एक थे, जिन्होंने न केवल भारतीय संस्कृति का विश्व भर में गौरव बढ़ाया, बल्कि युवाओं को ऊर्जा, आत्मविश्वास और चरित्र-निर्माण का एक नया मार्ग भी दिखाया। स्वामी जी का दर्शन और आदर्श भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत आज भी बना हुआ है। स्वामी विवेकानंद के सुझाए रास्ते पर चलकर ही एक भारत-श्रेष्ठ भारत, आत्म-निर्भर भारत और भारत को विश्व गुरु बनाने का सपना साकार किया जा सकता है। *

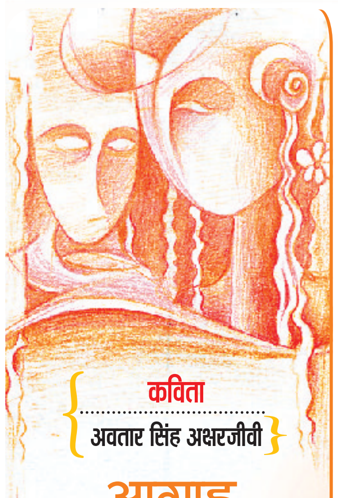

{ कविता
अवतार सिंह अक्षरजीवी }

आगाह

ऐसा नहीं है कि आकर्षण नहीं है
मेरी आंखों में किसी के लिए,
ऐसा भी नहीं है कि मैं कह दूं कि
मेरी भावनाएं मुझे शून्य मानती हैं,
बहुत प्रेम कर लेने के बाद
प्रेम करने का जी नहीं करता
मेरा मन इस तरह का उदार भी नहीं है,
फिर क्या सत्य है?
जो प्राप्त है, उसे पाने के बाद से
लगातार खोते चले जाना
भव्यता से खंडहर हो जाना
भरी-पूरी झील से कीचड़ हो जाना
सुर मिलना, अंत में एकाकी रह जाना
मुझे प्रेम के प्रति आगाह करता है-
प्रेम को पा लेना
प्रेम के समापन की लंबी यात्रा है,
प्रेम को न पाना
प्रेम करते चले जाने की निष्क्रियता है।

{ व्यंग्य
भूपेंद्र भारतीय }

जैसे चुनावों के समय कुछ कार्यकर्ता निःस्वार्थ भाव से दल की सेवा करते हैं और चुनाव जीतने के बाद मेवा किसी और के हाथ लगता है। उसी तरह आखिर में मंगल जैसों की थाली में सिर्फ पतला तरीनुमा पानी रह जाता है।

तपेली में तरी ही बची

मंगल के साथ पिछले दिनों बड़ा धोखा हो गया। धोखा क्या कहूं, मंगल की भाषा में यह एक तरह से 'सेवा का शिकार' होने जैसा है। या कहें, ये वही धोखा था, जो एक आम राजनीतिक कार्यकर्ता के साथ चुनाव के बाद जीतने वाला दल करता है। वैसे ही जैसे बड़े बाबू, चपरासी और कार्यालय के अन्य छोटे बाबुओं के साथ करते हैं, रिश्वत में आया अधिकांश माल बड़े बाबू निगल लेते हैं और अन्य के पास सिर्फ पतली तरी बचती है। सिर्फ दाल का पानी ही पानी, फिर उस तपेली में चम्मच हिलाते रहो। ऐसा ही पिछले दिनों मंगल के साथ हुआ। वह पिछले दिनों अपनी जाति के प्रतिभा सम्मान आयोजन में गया था, जिसे बड़ी होशियारी से समाजवादी ढंग में सामाजिक आयोजन कहा गया था। पहले आयोजन में सामाजिक नेताओं के द्वारा भाषणबाज प्रतिभाओं को जैसे जबरन पकड़कर सम्मानित किया गया हो। उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए जातिगत नेताओं द्वारा दो शब्द कहे गए। वे दो शब्द स्वयं की प्रशंसा में ज्यादा थे।

मंगल इस आयोजन में कार्यकर्ता की भूमिका में था। उसे किसी ने बोला नहीं था। ना ही चुनावी उम्मीदवारों की सूची जैसी किसी सूची में उसका नाम था और ना ही इसके लिए उसने कोई याचिका लगाई थी। वह भावुकता में चला गया। उसे सेवा करने का भी कुछ मन हुआ था। जैसे आजकल सब तरफ सेवा के लिए लोग जाते हैं। नेतागण देश की सेवा के लिए पागल हो रहे हैं। युवा अलग तरह से सेवा करना चाहता है। जैसे राष्ट्रीय स्तर पर इस देश का युवा 'देश सेवा' के लिए गलाकाट प्रतियोगी परीक्षा पास करता है और फिर कुछ ही वर्षों में सेवा के नाम पर भ्रष्टाचार के मामलों से देश के अखबारों में बड़ी-बड़ी हेडलाइन बनाता है। वहीं संसदीय और विधायी समितियों में जनप्रतिनिधि देश सेवा व नवाचार के नाम पर चार-पांच देशों की यात्रा करते हैं और जनप्रतिनिधि होने का कर्त्तव्य निभाते हैं। वैसे ही मंगल भी उस आयोजन में सेवा के लिए चला गया। जैसे युवा शुरू-शुरू में राजनीतिक-सामाजिक आंदोलनों में जाता है और भीड़ का शिकार हो या तो भावुकता में अपने हाथ-पैर तुड़वा लेता है या फिर पुलिस थाने के रजिस्टर में अपना नाम दर्ज कराकर राजनीति का स्थाई खिलाड़ी बन जाता है।

मंगल को भी लगा कि बड़े आयोजन में उसके हाथ कुछ तो आएगा। उसके जीवन में भी कुछ मंगल हो जाएगा। जैसे कर्मठ कार्यकर्ताओं की सेवा से मंत्रीजी जनसेवा करते हैं। उसे भी नेतृत्व की अग्रिम पंक्ति में आने का रोग चढ़ा। उसे भी लगा, समाज सेवा करने पर गाढ़ी तरी व साग दोनों का आनंद मिलेगा। वह भी अब नया कुर्ता-पायजामा पहनकर समाज सेवा की तपेली में अपनी सेवा रूपी चम्मच हिलाने गया था। उसने पढ़ा था, इस सेवा के लिए आजादी से पूर्व और उसके बाद बड़े-बड़े लोग, अपनी जमी-जमाई वकालत, व्यापार, जागीरदारी आदि छोड़कर इस सेवा में कूद पड़े थे। तो भला मंगल अपने समाज के आयोजन में टाट-पट्टी बिछाने से लेकर भोजन परोसने तक का काम क्यों नहीं कर सकता? आगे मंच और माइक भी मिलेगा। पूर्व में तो उसके जैसे कार्यकर्ताओं द्वारा समाज सेवा के लिए प्राण तक न्यौछावर कर दिए। क्या उन्होंने कम तरी-साग का आनंद उठाया? कैसे मालामाल हो गए! जैसे वे इस सेवा के लिए ही बने हों।

मंगल की मानें तो उस आयोजन में वह समाज सेवा के भाव से गया था। लेकिन उसका भाव वही था, जो अधिकांश सामाजिक संगठनों का रहता है। समाज में दबे-कुचले लोगों की सेवा के नाम पर सरकार से अनुदान की तरी-साग दोनों का आनंद उठाते हैं। मंगल सबको साग-तरी परोसता है। उसने सोचा यह सब मुझे भी मिलेगा। उसे भी दूसरे कार्यकर्ता तरी वाली साग परोसने आएंगे। जैसे मतदाता पांच साल में एक बार मतदान करने जाता है तो उसे लगता है कि देश अब उसके मत से चलेगा। लेकिन परिणाम देखकर कुछ दिनों में उसका मत बदल जाता है। और देश की राजनीति अपने मद में चलने लगती है। सत्ता के हाथी की चाल में उसकी आवाज दब जाती है। कहां तो वह दबे-कुचलों की आवाज उठाने आया था और चुनाव बाद वह स्वयं दबा-कुचला-सा हो जाता है।

धीरे-धीरे वह तरी-साग की सच्चाई जानने लगता है। कौन तरी खा रहा है और किसके हिस्से साग आता है? और अंत में बड़ी जनसंख्या को सिर्फ साग के पतले पानी से ही संतुष्ट होना पड़ता है। जैसे उस दिन मंगल ने बहुत मेहनत की थी। भाग-भाग कर सबको भोजन कराया। आयोजन को सफल बनाने में निःस्वार्थ भाव से सेवा की। जैसे चुनावों के समय कुछ कार्यकर्ता निःस्वार्थ भाव से दल की सेवा करते हैं और चुनाव जीतने के बाद मेवा किसी और के हाथ लगता है। उसी तरह आखिर में मंगल जैसों की थाली में सिर्फ पतला तरीनुमा पानी रह जाता है। *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

काव्यात्मक गद्य में लेखिका के मनोभाव

वर्तमान हिंदी कविता परिदृश्य में नीलेश रघुवंशी एक प्रतिष्ठित नाम हैं। कविता से इतर उनके द्वारा रचित दो उपन्यासों को भी बहुत पसंद किया गया है। अब हाल में प्रकाशित होकर आई पुस्तक 'गद्य का पानी' में उनके काव्यात्मक गद्य की रवानगी देखते ही बनती है। यह किसी एक विधा की सीमाओं में बंधी किताब नहीं है। यहां कई विधाओं का ऐसा मनोरम कोलाज नजर आता है, जो हमें लेखिका के भावजगत में उतरने, उनकी रचनात्मकता को बिल्कुल करीब से महसूसने और उनकी महीन संवेदनाओं को स्पर्श करने का रास्ता मुहैया कराता है। चार खंडों में बंटी इस किताब में नीलेश अपने अतीत से लेकर वर्तमान में आवाजाही करती नजर आती हैं। 'मन की चिट्ठी' खंड में वे मन, जीवन और समाज के विभिन्न तलों में उतरकर सृजन के रहस्य तलाशती हैं तो 'गद्य का पानी' खंड में अपने कुछ प्रिय रचनाकारों के सृजन जगत से गुजरते हुए, उत्पन्न विचारों को भी संजोती चलती हैं। उनके कुछ संस्मरणों और यात्रा संस्मरणों को 'आवारगी' खंड में पढ़ सकते हैं। अंतिम खंड 'जनरल बोगी' में संकलित उनके कुछ वक्तव्य और टिप्पणियां, हमें रचनाकार की अबूझ-अनदेखी सी सृजन भूमि में झांकने का झरोखा उपलब्ध कराती हैं। कहना चाहिए कि यह पुस्तक, पाठक को कई विधाओं से तैयार किश्ती के जरिए लेखिका के काव्यात्मक गद्य के अप्रतिम प्रवाह का आनंद लेने का अवसर प्रदान करती है। *

पुस्तकः गद्य का पानी,
लेखिकाः नीलेश रघुवंशी,
मूल्यः 399 रुपए,
प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

सांस्कृतिक आयोजन

धीरज बसाक

राजस्थान के बीकानेर में प्रत्येक वर्ष जनवरी के दूसरे सप्ताह में आयोजित होने वाला ऊंट महोत्सव, दुनिया भर में प्रसिद्ध है। 'रेगिस्तान का जहाज' कहे जाने वाले ऊंट के महत्व को दर्शाते और राजस्थान की लोक संस्कृति की झलक दिखाते इस महोत्सव की कुछ विशेषताओं के बारे में यहां बता रहे हैं।

लोक जीवन-संस्कृति की झलक दिखाता
राजस्थान का बीकानेर ऊंट महोत्सव

बीते दो दिनों से राजस्थान के बीकानेर में चल रहे वार्षिक ऊंट महोत्सव-2026 का आज अंतिम दिन है। राजस्थान की मरुस्थलीय आत्मा, जब परंपरा-लोकजीवन और आधुनिक समय से संवाद करती है, तब बीकानेर ऊंट उत्सव जैसा अनूठा सांस्कृतिक महोत्सव जन्म लेता है। यह केवल पर्यटन आयोजन भर नहीं है बल्कि उस सभ्यता का उत्सव है, जिसने ऊंट को जीवन-सहचर बनाया है।

जीवंत संवाद रचता महोत्सव: मानव सभ्यता के विकास क्रम में शुरू से ही ऊंट बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं। विशेष तौर पर राजस्थान के लोक जीवन की बात करें तो ऊंट, यहां के लोगों की यात्राओं, व्यापार, सुरक्षा और जीविका के हर मोड़ पर सहचर के रूप में मिलता है। ऊंटों की इसी प्रासंगिकता और उनकी सांस्कृतिक उपस्थिति को राजस्थान की विशिष्ट संस्कृति के रूप में देश और दुनिया के पर्यटकों के सामने प्रस्तुत करता है बीकानेर में हर साल आयोजित होने वाला यह ऊंट महोत्सव। यह उत्सव राजस्थान की परंपरा एवं संस्कृति को मंच देता है और वर्तमान से उसका जीवंत संवाद रचता है।

वर्तमान-अतीत की झलक: राजस्थान के थार इलाके में सदियों से ऊंट, जीवनरेखा का महत्वपूर्ण अंग रहा है। यात्रा, व्यापार, कृषि और रक्षा, हर क्षेत्र में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। बीकानेर रियासत के दौर में ऊंटों की नस्ल सुधार, उनकी साज-सज्जा और प्रशिक्षण की एक विलक्षण परंपरा विकसित हुई, जिसने आगे चलकर ऊंट उत्सव की आधुनिक प्रस्तुति की रूपरेखा तय किया। यह उत्सव न सिर्फ लोकस्मृति और लोकसंस्कृति को मंच देता है बल्कि नई पीढ़ी को भी अपनी परंपरा से जोड़कर रखता है। उत्सव के दौरान सजे-धजे ऊंटों की भव्य परेड, ऊंट नृत्य, ऊंटों की सौंदर्य प्रतियोगिता और कौशल प्रदर्शन जैसी गतिविधियां मिलकर रेगिस्तान की सौंदर्य भाषा को अनंत विस्तार देते हैं। लोकसंगीत, कालबेलिया और घूमर की थाप पर जब ऊंट लयबद्ध ढंग से चलते हैं, तो लगता है समय ठहर गया है और दर्शक इतिहास के साथ वर्तमान को एक फ्रेम में देख रहे हैं।

हर गतिविधि करती है आकृष्ट: भव्य ऊंट शोभा परेड, ऊंट नृत्य, ऊंट करतब, ऊंट सौंदर्य प्रतियोगिता, ऊंट दौड़ और कौशल प्रदर्शन, लोकसंगीत, कालबेलिया और घूमर जैसे लोकनृत्य, शिल्प, खान-पान मेला और दीप प्रज्वलन की सांस्कृतिक संध्या, इस उत्सव के मुख्य आकर्षण होते हैं। ऊंट परेड में जहां सजे-धजे ऊंटों की भव्य रंग-बिरंगी कदमताल देखने को मिलती है, वहीं ऊंट नृत्य कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित ऊंट, लोक धुनों पर लयबद्ध होकर थिरकते हैं। अपनी तरह के अनोखे आयोजन ऊंट सौंदर्य प्रतियोगिता के तहत ऊंटों की कद-काठी, साज-सज्जा और चाल-ढाल के आधार पर किसी एक सर्वश्रेष्ठ ऊंट को विजेता चुना जाता है। ऊंट दौड़ के कौशल प्रदर्शन में मरुस्थलीय मैदानों में गति और नियंत्रण का प्रदर्शन करते हुए ऊंट दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। ढोलक, खड़ताल और अलगोजा की धुनों पर नृत्य करतीं राजस्थानी महिला नृत्यांगनाएं, कालबेलिया और घूमर जैसे लोक नृत्यों पर राजस्थानी लोक-संस्कृति का उत्सव प्रस्तुत करती हैं। इस महोत्सव में ऊंट के ऊनी उत्पाद, कशीदाकारी, मिट्टी के शिल्प जैसे प्रसिद्ध राजस्थानी शिल्प का उत्सव भी सजता है। खान-पान की बात करें, तो इस उत्सव में बीकानेरी भुजिया, रसगुल्ला तथा घेवर जैसे पारंपरिक व्यंजनों का पर्यटक बड़े चाव से स्वाद लेते हैं।

कई रूपों में है महत्वपूर्ण: बीकानेर ऊंट उत्सव, राजस्थान और देश के सांस्कृतिक उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इससे देश की भव्य विरासत का संरक्षण भी संभव होता है। इससे ऊंट पालन, पारंपरिक साज-सज्जा और लोककला का दस्तावेजीकरण व मंचन होता है। इससे विलुप्त होती परंपराओं को नया जीवन मिलता है। देश-विदेश से आने वाले पर्यटक राजस्थान की लिविंग कल्चर देखते हैं, जिससे भारत की सॉफ्ट पावर को बल मिलता है। इस महोत्सव में युवाओं की भागीदारी, उन्हें आधुनिकता और परंपरा से परिचय कराता है। इन सब वजहों से ऊंट उत्सव एक अनूठा उत्सव बन जाता है।

ऊंट उत्सव के प्रमुख आकर्षण: अगर आप इस उत्सव में शामिल होने जा रहे हैं तो सुबह की परेड और शाम को होने वाले सांस्कृतिक आयोजन में हिस्सा लेने से न चूकें। इस उत्सव में आपको स्थानीयता का भरपूर रस मिलेगा, जो इस उत्सव की विशेष खूबी है। उत्सव में लोक संस्कृति, खान-पान और हस्तशिल्प का सौंदर्य देखने को तो मिलता ही है। इस उत्सव में अगर शामिल होने के लिए आप आ रहे हैं तो आस-पास के अन्य ऐतिहासिक दर्शनीय स्थलों की यात्रा करने का अवसर भी मिल जाता है। कुल मिलाकर बीकानेर का ऊंट उत्सव एक ऐसा उत्सव है, जिससे रंगीले राजस्थान की धज बनती है। *

तन-मन में करे ऊर्जा का संचार
सांस्कृतिक पर्व मकर संक्रांति

मकर संक्रांति पर्व की धार्मिक, सांस्कृतिक महत्ता तो है ही, इसके स्वास्थ्य संबंधी कई पहलू भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। यहां जानिए, इस पर्व से जुड़ी उन परंपराओं के बारे में, जो शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य को बेहतरी प्रदान करते हैं।

पर्व-महात्म्य / डॉ. मोनिका शर्मा

मकर संक्रांति केवल एक धार्मिक, सांस्कृतिक या पारंपरिक त्योहार भर नहीं है। यह सामाजिक समरसता, मेल-जोल और मदद के उन मानवीय भावों से जुड़ा उत्सव है, जिनकी आज के बिखरते भरोसे के परिवेश में बहुत अधिक दरकार है। अहम बात यह भी है कि यह उत्सव सेहत बनाने और संवारने का पाठ भी पढ़ाता है। बीते कुछ बरसों में रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी होने की महत्ता को हमने अच्छे से समझ लिया है। परंपरागत खान-पान और संतुलित जीवनशैली का महत्व भी अब और गहराई से समझ आया है। ऐसे में मकर संक्रांति जैसे पर्व से जुड़ी हमारी मान्यताएं और क्रिया-कलाप स्वास्थ्य सहेजने वाले हैं।

सधी दिनचर्या की अहमियत: यह त्योहार न केवल हमारे रहन-सहन, खान-पान और दिनचर्या में बदलाव लेकर आता है बल्कि सेहत के लिए भी कई संदेश लिए है। गुनगुनी धूप वाले इस मौसम में हमारी दिनचर्या भी बदल जाती है। यह पर्व, प्रकृति के जरिए स्वास्थ्य को सहेजने की सीख देता है। मकर संक्रांति पर सूर्य के उत्तर दिशा में जाने से दिन बड़े होने लगते हैं और इसी के साथ वसंत ऋतु का भी आगमन होता है। मकर संक्रांति से प्रकृति भी करवट बदलती है। जो सर्दियों के बाद ऊर्जा से भरी दिनचर्या की ओर लौटने का समय होता है। ऊर्जा और उजास का यह पर्व, प्रकृति के बदलाव संग सामंजस्य बनाए, हुए अनुशासित जीवन जीने की सीख देता है। आज वैज्ञानिक अध्ययन और चिकित्सकों की सलाह भी मन और तन दोनों को सहेजने के लिए सधी दिनचर्या को सबसे जरूरी बताते हैं।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए जरूरी धूप: इस पर्व पर पतंग उड़ाने की परंपरा है। यह केवल मनोरंजन भर नहीं है। पतंग उड़ाने की यह रीत सेहत से भी जुड़ी है। मौजूदा जीवनशैली में कई व्याधियां तो केवल धूप की कमी के कारण ही जड़ें जमा रही हैं। ऐसे में खुले आसमान तले छत पर पतंग उड़ाना और सूर्य की किरणों का सीधे हमारे शरीर के संपर्क में आना भी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है। अब तो वैज्ञानिक भी इस बात की पुष्टि कर चुके हैं कि धूप में बैठने से शरीर को विटामिन-डी मिलता है। कई तरह के कीटाणु खत्म होते हैं और मन भी अवसाद से दूर रहता है। नींद अच्छी आती है। ब्लड सर्कुलेशन अच्छा होता है। जिससे शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यह प्राकृतिक उजास समग्र जीवन को संवारती है। मनोभावों में संतुलन लाती है। अवसाद और थकान को दूर कर ऊर्जावान जीवनचर्या से जोड़ती है।

बेहतर होती है मानसिक सेहत: सर्दियों का मौसम एक ठहराव लाता है, जिसमें मन अनमना सा रहता है। संक्रांति पर्व से मौसम का बदलाव और खिली धूप की रंगत मन को सुकून देती है। यही वजह है कि यह पर्व मन की सेहत को बेहतर बनाने वाला भी है। यह प्रकृति का आभार जताने का पर्व भी है। साथ ही सूर्य की उपासना का यह पर्व, यह भी सिखाता है कि हम देना सीखें। क्योंकि सूर्य अपना प्रकाश, ऊर्जा और रोशनी की सौगात पूरे संसार को बिना किसी भेदभाव के बांटता है। माना जाता है कि सूर्य का उत्तर दिशा में होना भी आध्यात्मिक रूप से काफी महत्व रखता है। उत्तरायण में सूर्य के होने से व्यक्ति में नई ऊर्जा का संचार होता है। इस समय खिली धूप से मन को सकारात्मकता की उजास मिलती है। सूरज की किरणें पड़ने पर अच्छा महसूस कराने वाले हार्मोन, सेरेटोनिन और एंडोर्फिन का स्राव बढ़ता है, जिससे हमारे मन को खुशनुमा अहसास की सौगात मिलती है।

त्योहारी आहार से बढ़े इम्युनिटी: देश भर में लोग मकर संक्रांति के त्योहार पर तिल, मूंगफली, गुड़, चावल और उड़द की दाल जैसे आहार का सेवन करते हैं। इन सभी चीजों में सबसे ज्यादा महत्व तिल को दिया जाता है, जो शरीर को निरोग रखता है। मकर संक्रांति के पर्व पर जिन चीजों को खाने में शामिल किया जाता है, वे पौष्टिक होने के साथ ही साथ शरीर को ऊर्जा देने वाली भी होती हैं। इस पर्व पर खाई जाने वाली लगभग सभी चीजें रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली हैं। समझना मुश्किल नहीं कि सांस्कृतिक विरासत ही नहीं सेहतमंद रहने के मोर्चे पर भी यह त्योहार बहुत महत्वपूर्ण है। आध्यात्मिक ही नहीं वैज्ञानिक आधार भी लिए है। समझना जरूरी है कि बिखरते मन-जीवन के इस दौर में तो सामाजिक और वैज्ञानिक चेतना जगाने वाले ऐसे पर्वों की सार्थकता और बढ़ गई है। *

सजेशन

नरेंद्र कुमार

डिजिटल टेक्नोलॉजी में माहिर होना, आज कामयाबी की सबसे जरूरी मेरिट बन गई है। आज हर जगह जिस योग्यता की सबसे ज्यादा डिमांड है, वह डिजिटल टेक्नोलॉजी ही है। इस बारे में आपको पता होना चाहिए।

प्रोफेशनल सक्सेस के लिए जरूरी है डिजिटल स्मार्टनेस

आज के दौर में प्रोफेशनल सक्सेस सिर्फ डिग्री, अनुभव या पुराने सर्टिफिकेट पर निर्भर नहीं करती है। वास्तव में प्रोफेशनल सक्सेस की परिभाषा अब बिल्कुल बदल चुकी है। कंपनियों से लेकर स्टार्टअप तक हर जगह अब जिस एक चीज की योग्यता सबसे ज्यादा समझी जाती है, वह है डिजिटल स्मार्टनेस। इसलिए डिजिटल टेक्नोलॉजी में एक्सपर्ट होना जरूरी है।

आज के दौर की जरूरत: पिछले एक दशक से प्रोफेशनल वर्ल्ड में जितना तेज बदलाव हुआ है, पिछले 50 सालों में उतना बदलाव किसी क्षेत्र में नहीं हुआ। एआई आटोमेशन, रिमोट वर्क, एप इकोनॉमी ने लगभग हर सेक्टर की कार्यशैली को एक नई दिशा दी है। दरअसल, अब लगभग सभी सेक्टर्स में पेपर वर्क बहुत कम होता है। अधिकांश काम डिजिटल स्क्रीन पर ही होते हैं, इसलिए हर सेक्टर का वर्किंग सेंटर डाटा बन चुका है। मीटिंग्स अब ऑफिस में आमन-सामने बैठकर कम, ऑनलाइन ज्यादा होती हैं। इसलिए टेक एक्सपर्ट एंप्लॉइज ही कंपनी की पहली पसंद बन गए हैं। ऐसे में अगर अपने करियर में निरंतर आगे बढ़ना है तो डिजिटल स्किल में दक्षता हासिल करिए, यही एकमात्र आगे बढ़ने का जरिया है। आपके पास एकेडमिक कोई भी डिग्री हो, अगर आपमें डिजिटल स्किल नहीं है तो याद रखिए कि आसानी से नौकरी नहीं मिलने वाली। अगर मिल भी गई तो आप अपने करियर में बहुत आगे तक ग्रो नहीं कर पाएंगे।

हर सेक्टर के लिए है जरूरी: प्रोफेशनल करियर कोई भी हो, लेकिन आज हर सेक्टर के लिए डिजिटल टेक्नोलॉजी जरूरी हो चुकी है। फिर चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, स्वास्थ्य का क्षेत्र हो, कृषि क्षेत्र हो, बैंकिंग हो, पत्रकारिता हो, कानून हो, बिजनेस या इंजीनियरिंग हो, हर क्षेत्र डिजिटल टेक्नोलॉजी से ही संचालित होता है। इसलिए आज किसी भी करियर के लिए ये क्षमताएं जरूरी हैं। जानकारी खोजने की डिजिटल क्षमता, ई-मेल हैंडलिंग, ऑनलाइन कम्युनिकेशन, सोशल मीडिया मैनेजमेंट, एआई टूल्स का उपयोग, एक्सेल पावर, बीआई जैसे डाटा टूल्स, टीम वर्क के लिए जूम, स्लैक, टीम्स जैसे प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल, सोशल मीडिया और डिजिटल ब्रांडिंग जैसी स्किल्स जो व्यक्ति अपने करियर में नहीं अपनाता या अपनाने की क्षमता नहीं रखता, तो समझिए वो मॉडर्न जॉब मार्केट से आउटडेटेड हो जाएगा।

एआई को बनाएं अपना कुलीग: बीते कुछ वर्षों में एआई, हर प्रोफेशनल सेक्टर में हमारा कुलीग बनने के दौर में प्रवेश कर चुका है। एआई अब सिर्फ मशीन टूल नहीं, कई कामों में मददगार बन चुका है। एआई अब प्रोफेशनली आगे बढ़ने में बहुत हेल्पफुल हो सकता है। यह ऐसे तरीकों से आपकी मदद कर सकता है, जिसके बारे में पहले कभी सोचा भी नहीं गया था। प्रेजेंटेशंस को तैयार करना, प्रोजेक्ट की प्लानिंग करना, कोड-ऑटोमेशन, इंटरव्यू की तैयारी और नए स्किल्स सीखने में यह बहुत हेल्पफुल साबित हो रहा है। आज एआई के उपयोग करने वाले प्रोफेशनल रूटीन वर्क को दूसरे लोगों के मुकाबले 40 से 50 फीसदी कम समय में कर लेते हैं। जाहिर है, दूसरों से ज्यादा प्रोफेशनल ग्रोथ कर पाते हैं। इसलिए अपने करियर में मनचाही कामयाबी चाहते हैं, लेकिन अभी तक डिजिटल टेक्नोलॉजी में दक्ष नहीं हैं तो बिना देर किए सबसे पहले इसमें दक्षता हासिल कर लें।

हर सेक्टर के लिए अलग डिजिटल टूल: आज कंपनियां अपने लिए एंप्लॉइज रिक्रूट करते समय यह नहीं पूछतीं कि आप कंप्यूटर जानते हैं या नहीं बल्कि पूछते हैं, आप कौन-सा डिजिटल टूल कितनी दक्षता से इस्तेमाल कर सकते हैं? क्योंकि आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसके लिए कोई विशेष डिजिटल स्किल न मौजूद हो। जरा इन कुछ डिजिटल तकनीकों पर नजर दौड़ाइए और फिर सोचिए इनमें से किस टूल में दक्ष होना आपके प्रोफेशनल ग्रोथ के लिए जरूरी है। जैसे-डाटा एनालिटिक्स, साइबर सिक्यूरिटी बेसिक्स, सोशल मीडिया मैनेजमेंट, ऑटोमेशन टूल्स, एक्सेल एडवांस, ग्राफिक-वीडियो टूल, सीआरएम/ईआरपी सॉफ्टवेयर, एआई सपोर्ट, वर्क फ्लो आदि। इन सारे के सारे टूल्स को ऑपरेट करना अब प्रोफेशनल मेरिट लिस्ट का आधार बन चुका है और करीब-करीब हर क्षेत्र की जॉब का हिस्सा बन चुका है।

पावरफुल है डिजिटल नेटवर्किंग: अब नॉर्मल रेज्यूमे से कहीं ज्यादा लिंक्डइन जैसे प्लेटफॉर्म शक्तिशाली साबित हो रहे हैं। यहां की आपकी तस्वीर, प्रोफाइल, पोस्ट, कमेंट, बातचीत, सब आपकी डिजिटल पहचान बनाते हैं। डिजिटल नेटवर्किंग के बहुत फायदे हैं। इससे अच्छे प्रोफेशनल अवसरों तक सीधे पहुंच बनती है। इंडस्ट्री लीडर से सीधा संवाद होता है। कई तरह की नौकरियों का पता चलता है। किसी खास प्रोजेक्ट और फ्रीलांस काम करने का भी अवसर मिलता है। इसके जरिए हर प्रोफेशनल अपने आप में सेल्फ ब्रांड बन सकता है, यह कंसेप्ट भी डिजिटल मीडिया से ही आया है। आज 50 प्रतिशत से ज्यादा कॉर्पोरेट जॉब्स डिजिटल रेफरल या नेटवर्क से मिल रही हैं और यह आंकड़ा यहां रुका नहीं है, लगातार ऊपर की ओर बढ़ रहा है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि क्यों डिजिटल टेक्नोलॉजी में दक्षता आज की सबसे बड़ी जरूरत बन गई है।

ई-लर्निंग के खुले रास्ते: आज सफल करियर का मंत्र है, 'जो सीखना बंद कर देता है, वह आगे बढ़ना भी बंद कर देता है।' डिजिटल टेक्नोलॉजी की सबसे बड़ी देन है, ऑनलाइन सीखने की असीमित आजादी। कोरसेरा, उडेमी, एनबीटीएल, गूगल सर्टिफिकेट्स, यू-ट्यूब पर उपलब्ध कोर्सेस, आज ऐसे अनेक प्लेटफॉर्म है, जहां जबर्दस्त असीमित ज्ञान है। लेकिन अगर आप डिजिटल टेक्नोलॉजी से अंजान हैं, तो यह सारा ज्ञान आप नहीं पा सकते हैं। इसलिए आपका रेग्युलर डिजिटल नॉलेज से खुद को अपडेट करते रहना जरूरी है। *

सिने ट्रेंड

हेमंत पाल

हिंदी फिल्म निर्माण के आरंभिक दौर से ही साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। हालांकि इन फिल्मों की सफलता का प्रतिशत कम ही रहा है। इसकी प्रमुख वजहों के साथ यहां कुछ ऐसी फिल्मों पर भी नजर डाल रहे हैं, जो साहित्यिक कृतियों पर आधारित रहीं।

साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्में
कम हुईं सफल-अधिकांश रहीं असफल

किसी भी साहित्यिक कृति पर आधारित फिल्म बनाने के लिए फिल्म के निर्माता-निर्देशक और स्क्रिप्ट राइटर का उस साहित्यिक कृति के मूल भाव को समझना पहली शर्त होती है। कथाकार की भावना को समझना, उसमें मनोरंजन का पक्ष ढूंढ़ना और सबसे बड़ी बात, यह पता लगाना कि जब यह पर्दे पर आएगी तो इसे दर्शक स्वीकारेंगे या नहीं, इन बातों को जानना-समझना बहुत जरूरी है।

शुरुआत से बन रहीं साहित्यिक फिल्में: साहित्य और सिनेमा दोनों ही अलग विधाएं हैं। लेकिन फिल्म निर्माण के आरंभिक दौर से ही साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। हां, इस तरह की साहित्य-आधारित फिल्में संख्या की दृष्टि से कम जरूर बनी हैं। हिंदी की पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' भी भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक 'राजा हरिश्चंद्र' पर आधारित थी। बाद में प्रेमचंद की कई कालजयी कृतियों पर फिल्में बनाई गईं। कुछ फिल्में चलीं, तो कुछ को दर्शकों ने नकार दिया। साहित्यिक कृतियों पर फिल्में बनाने के अब तक कई प्रयोग हुए, पर ज्यादातर को सफलता नहीं मिली! जितना किसी साहित्यिक कृति को पसंद किया गया, उस पर बनी फिल्में उतनी सफल नहीं रहीं।

'रेणु' की कहानी पर बनी 'तीसरी कसम'

साहित्यिक कृति पर आधारित यादगार फिल्में: बॉलीवुड में साहित्यिक रचनाओं पर आधारित कुछ फिल्मों की बात करें तो प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' पर इसी नाम से बनी फिल्म, फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी पर बनी 'तीसरी कसम', महाश्वेता देवी की कहानी पर बनी 'रुदाली', विमल मित्र के उपन्यास पर बनी 'साहब, बीवी और गुलाम', रवींद्र नाथ टैगोर की कहानी 'नष्टनीड़' पर सत्यजीत रे की फिल्म 'चारुलता', ये कुछ यादगार फिल्में हैं। भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास 'चित्रलेखा' पर केदार शर्मा ने फिल्म बनाई, जो सफल भी रही। कमलेश्वर की कृतियों पर आधारित गुलजार द्वारा बनाई गई फिल्में 'आंधी' और 'मौसम' की गिनती भी साहित्य पर आधारित बेहतरीन फिल्मों में होती है। बांग्ला फिल्मकार बासु चटर्जी ने राजेंद्र यादव के उपन्यास पर आधारित 'सारा आकाश' और मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच है' पर आधारित 'रजनीगंधा' जैसी प्रशंसनीय फिल्में बनाई। शरतचंद्र के उपन्यासों पर भी फिल्में बनीं, जिनमें 'देवदास' भी शामिल है।

प्रभाव छोड़ने में असफल रही 'मोहल्ला अस्सी'

कमलेश्वर के उपन्यास पर आधारित फिल्म 'आंधी'

नहीं चलीं साहित्य पर आधारित ये फिल्में: साहित्य पर आधारित कई ऐसी फिल्में बनीं, जिसे आशानुकूल सफलता नहीं मिली। चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' पर भी फिल्म बनी। आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास 'धर्मपुत्र' पर बीर.आर. चोपड़ा ने फिल्म बनाई। कहानीकार राजेंद्र सिंह बेदी की कृति 'एक चादर मैली सी' पर भी फिल्म बनी, पर वह भी अपेक्षा के अनुसार नहीं चली। इन फिल्मों के असफल होने का एक कारण संभवतः यह भी था कि फिल्मकार और कलाकार लेखक के मर्म को पकड़कर उसे पर्दे पर ठीक से उतार नहीं पाए! हाल के वर्षों में कथाकार काशीनाथ सिंह की मशहूर कृति 'काशी का अस्सी' पर चंद्र प्रकाश द्विवेदी ने फिल्म 'मोहल्ला अस्सी' बनाई, पर यह फिल्म भी दर्शकों की कसौटी पर खरी नहीं उतरी। अपने संवादों को लेकर फिल्म विवादों में फंसी सो अलग।

साहित्य और सिनेमा में होता है अंतर: साहित्य किसी दृश्य या घटना की जो व्याख्या या विश्लेषण करता है, हर पाठक के पास वही पहुंचता है। पाठकों के स्तर में अंतर के आधार पर उसका प्रभाव भी अलग-अलग होता है। जबकि सिनेमा, दृश्य माध्यम होता हैं। उसके पास व्याख्या और विश्लेषण की सुविधा बहुत कम होती है। साहित्य में जो व्याख्या उसके प्रभाव को बढ़ा देती है, उसी व्याख्या की कोशिश सिनेमा के असर को कमजोर कर देती है। जो विवरण साहित्य की ताकत होता है, वही सिनेमा की कमजोरी बनकर सामने आता है। साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पाठक इसे पढ़ते हुए अपनी कल्पनाशक्ति से दृश्यचित्र बनाता है। जबकि सिनेमा में दर्शक को डायरेक्टर की कल्पनाशक्ति देखनी पड़ती है।

होती हैं व्यावसायिक बाध्यताएं: हर फिल्म के पीछे व्यावसायिक दबाव भी काम करता है। ये दबाव भी होता है कि मनोरंजन के बीच साहित्यकार की सोच, उसकी कृति के साथ भी पूरा इंसाफ हो। साहित्यकार अपनी कल्पना शक्ति से पाठकों को जिस कहानी से रूबरू करवाता है, फिल्मकार उसे उतनी ईमानदारी से पर्दे पर उतार भी पाता है या नहीं, ये भी ध्यान रखने वाली बात है। एक ही कहानी को अलग-अलग पाठक अपने मानस में अलग प्रभाव के साथ लेते हैं। जबकि फिल्मकार को उसे हर दर्शक के नजरिए से सजाना पड़ता है। इन्हीं कारणों से अधिकांश मशहूर साहित्यिक कृतियों के फिल्मी प्रयोग खास सफल नहीं हो पाए। इसे हिंदी फिल्मों का दुर्भाग्य ही माना जाना चाहिए कि फिल्मकारों और फिल्म से जुड़े अधिकांश लोगों का साहित्य से कोई सरोकार नहीं रहा, जबकि अन्य क्षेत्रीय और विदेशी भाषाओं में बनी कई फिल्में, साहित्यिक कृतियों से जुड़ी रहीं। हम उम्मीद कर सकते हैं आने वाले समय में शायद फिल्मकारों की नजर अच्छी कहानियों पर पड़े, वे उन्हें पर्दे पर सफलतापूर्वक उतार सकें और इस तरह की फिल्में सफल भी हों। *

मन्नू भंडारी की कहानी पर बेस्ड 'रजनीगंधा'